हिन्दी प्रवेशिका - 3

(वागड़ क्षेत्र के बच्चों के लिए)

संपादक

जगदीश चन्द्र शर्मा

सत्यमेव जयते

भारतीय भाषा संस्थान

मानसगंगोत्री, मैसूर 570 006

हिन्दी प्रवेशिका - 3

(वागड़ क्षेत्र के बच्चों के लिए)

परामर्श

डा. ई. अण्णामलै
डा. फ्रांसिस एक्का

प्रायोजना अधिकारी

डा. जगदीश चन्द्र शर्मा

प्रतिभागी

डा. राजेश सचदेव
श्री खातू लाल मीणा
श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर
श्री प्रकाश भटनागर
कु. लक्ष्मी डामोर
श्रीमती कमला जैन
श्री. देवीप्रसाद शास्त्री

कलाकार

परमानन्द बारीक

प्रकाशन सहायता

श्रीनिवासाचार्य
ए. सुब्रामण्यम
एस.जे. पाल
एस. चौधरी
कुमारी अनीता
श्रीमती उषा

हिन्दी प्रवेशिका - 3
(वागड़ क्षेत्र के बच्चों के लिए)

संपादक
जगदीश चन्द्र शर्मा

भारतीय भाषा संस्थान
मानसगंगोत्री, मैसूर 570 006

HINDI PRAVESHIKA - 3
Jagdish Chandra Sharma (Ed.)
Crown Quarto
Pages i-x, 1-160
Copies 1000

First Published : January 1994
Magha 1915

Experimental Edition

Published by Dr. E.Annamalai, Director,
Central Institute of Indian Languages, Mysore.
Printed by Mr. S.B.Biswas, Manager
CIIL Printing Press, Manasagangotri, Mysore 570 006
Production : K. Srinivasacharya

प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा निसंदेह आर्थिक एवं सामाजिक विकास का एक अभिन्न अंग है । यदि हमारा समाज आदिवासी वर्ग का उत्थान चाहता है तो यह आवश्यक है कि उनमें शिक्षा की ज्योति जगाये । आदिवासी बच्चों की शिक्षा उनके वातावरण, जीवन और भाषा को ध्यान में रखकर ही सुगम हो सकती है । अधिकतर पुस्तकें मध्य वर्गीय एवं उच्च समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं और समाज के पिछड़े वर्ग को अध्ययन के लिए शायद ही प्रोत्साहित करती हैं । ऐसा इसलिए होता है क्योंकि स्कूल एवं घर की भाषा में प्रायः समानता नहीं होती और यह समस्या आदिवासी बच्चों के लिये अधिक बाधक है क्योंकि स्कूली भाषा एवं उनके परिवेश की भाषा में अधिक अंतर है । इसके अतिरिक्त अधिकतर आदिवासी बच्चों के लिए स्कूल जाने की यह पहली पीढ़ी है । बच्चों के लिये स्कूल का वातावरण विचित्र होता है और घर पर उन्हें पढ़ने की कोई सहूलियत नहीं मिलती । इसी वजह से आदिवासी बच्चे प्राथमिक स्तर पर ही या तो फेल हो जाते हैं या स्कूल छोड़ देते हैं । राजस्थान प्राथमिक स्तर पर लगभग 70% बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं और दूसरे राज्यों में भी स्थिति लगभग ऐसी ही है ।

आदिवासी बच्चों की समस्या को ध्यान में रखते हुए इस संस्थान ने इन बच्चों को मूलधारा में लाने के लिए द्विभाषी शिक्षा का प्रावधान किया है जिसके अंतर्गत बच्चों को मातृभाषा के माध्यम से राज्यभाषा में परिवर्तित करने का प्रावधान है । शिक्षाविदों, भाषा - वैज्ञानिकों एवं मनो-वैज्ञानिकों का यह मत है कि इस व्यवस्था से बच्चों का बौद्धिक विकास अधिक हो पाता है एवं वे सुगमता से मुख्य धारा में जुड़ सकते हैं । इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने राजस्थान में भील आदिवासी बच्चों को हिन्दी सिखाने का प्रयास किया है । हम आशा करते हैं कि इस प्रयास से आदिवासी बच्चे लाभान्वित होंगे और शिक्षा मे प्रगति कर पायेंगे ।

ई.अण्णामलै
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

प्राक्कथन

राजस्थान के वागड़ क्षेत्र के आदिवासी बच्चों के लिए चलाए गए वागड़ी - हिन्दी द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत तैयार की गई यह तीसरी पुस्तक है । पहली दो पुस्तकों की सहायता से आशा की जाती है कि बच्चे देवनागरी लिखना, पढ़ना एवं हिन्दी के सरल वाक्य समझना एवं बोलना सीख गए होंगे। आदिवासी बच्चों को स्कूल की मुख्य धारा से जोडना है। अभी इन का हिन्दी पर इतना अधिकार नहीं है कि वे राजस्थान के पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई पुस्तक को समझ सकें । इस पुस्तक के माध्यम से राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित हिन्दी के पठ्यक्रम के अनुसार ही पाठ दिये गए है । किन्तु उन्हीं पाठों मे सरल हिन्दी का प्रयोग करने का प्रयास किया गया है । हिन्दी के कठिन शब्दों का वागडी समानार्थ दिया गया है और प्रयास किया गया है इन्हें हिन्दी एवं वागड़ी के वाक्यों की सहायता से समझाया जाए । इससे बच्चों का हिन्दी भाषा का ज्ञान बढ़ेगा । इस प्रयास से आशा है की आगे की कक्षाओं में ये बालक हिन्दी के माध्यम से शिक्षा ग्रहण सहज रूप से कर पायेंगे । आशा की जाती है कि इस पुस्तक की सहायता से राजस्थान के हिन्दी भाषा के पठ्यक्रम की मूल धारा में जूड़ पाएंगे । यह प्रयोग वागड क्षेत्र (डूंगरपुर, बांसवाडा एवं उदयपुर) के आदिवासी बालकों को वागडी भाषा के माध्यम से हिन्दी भाषा की ओर ले जाने का प्रयास है । इसी क्रम में पहले लिखी गई पुस्तक कें वागडी - हिन्दी प्रवेशिका - 1, वागडी प्रस्तुत हिन्दी प्रवेशिका - 2 का निर्माण किया गया , जिनका उपयोग प्रोत्साहित रहा ।

इस पुस्तक के निर्माण में कई विद्वानों, शिक्षाविदों, अधिकारियों एवं साथियों का सहयोग रहा है । जिनके प्रति आभार प्रदर्शित करना मेरा परम कर्तव्य है । भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर एवं अन्य संस्थानों के कई विद्वानों का इस कार्य के संपूर्ण करने मे महत्व पूर्ण योग रहा है । जिनके प्रति आभार प्रदर्शित करना मैं कभी भी नही भूल सकता। उनमे डा. राजेश सचदेव, सुश्री रेखा शर्मा श्रीमती कमला जैन एवं श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ ।

इस संदर्भ में मै राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग एवं उनके अधिकारीयों के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनके सहयोग के अभाव में इस कार्यक्रम को सफलता प्राप्त होना संभव नहीं था । उदयपुर स्थित राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक के

सहयोग एवं प्रोत्साहन के प्रति मैं ह्रदय से आभारी हूँ । इसी संस्थान के डा. राकेश तैलंग एवं वासुदेव शास्त्री को भी धन्यवाद देता हूँ जिनके बहुमूल्य विचारो एवं सहयोग ने पुस्तक के लेखन को लाभान्वित किया है।

मै राजास्थान के उन अध्यापक साथियों का विशेष रूप से आभारी हूँ जिनके सहयोग के बिना पुस्तक लेखन का प्रयास सफल होना संभव नही था इनमे श्री खातूलाल मीणा, सूश्री लक्ष्मी डामोर, श्री एस लाल पाटीदार के नाम उल्लेखनीय हैं ।

अंत में यह पुस्तक उन आदिवासी वागड़ी बालकों को समर्पित करता हूँ जो विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी उज्वल भविष्य की लालसा लिये ज्ञानार्जन में लगे हैं ।

जगदीश चन्द्र शर्मा

पाठ - सूची



पाठ 1

भारत माता

(1)

तेरी गोदी में जनमे हम
अपनी आंखें खोली।
सीख गए तुतला - तुतला कर
अपनी प्यारी बोली।
तेरे आंगन खेले - कूदे
अपने पैरों खड़े हुए।
तेरा अन्न और जल पाया
मा हम इतने बड़े हुए।
तेरी हवा रमी साँसों में
बना रक्त का नाता।
जय -जय भारत माता।

(2)

सुन्दर मुकुट हिमालय तेरा
सबसे ऊंचा चमक रहा।
नदियों की धारा से चम - चम
तेरा मुखड़ा दमक रहा ।
मेघ सजल वर्षा कर जाते
पंखा झलता मलय - पवन।
ऋृतु बसंत हर वर्ष सजाता
तेरा घर - आंगन - उपवन।
तेरे चरण चूमने व्याकुल
सागर उमड़ा आता।
जय - जय भारत माता।

(3)

सबके हित के लिए जिएँ हम
      और मरें हम यह परिपाटी ।
रणथम्भोर कहानी कहता
      साक्षी है हल्दीघाटी।
चम्बल - माही की लहरों पर
      रथ विकास का दौड़ाएँ।
मेहनत करने वालों में हम
      नाम लिखाएँ, यश पाएँ।
उड़ता रहे तिरंगा झंडा
      जन - गण - मन नित गाता।
जय - जय भारत माता ।

★★★★

पाठ - 1

भारत माता

हे भारत माता तेरी जय हो , तेरी हम जयकार करें । तू हमारी जन्म भूमि है । तू हमारी धरती माता है ।

तेरी गोदी में जन्म लेकर हमने आंखें खोलीं । तुतला कर अपनी प्यारी बोली सीख गए । तेरे आंगन में खेले कूदे और अपने पैरों पर खड़े हुए । तेरा अन्न - जल पाकर हम बड़े हुए हैं । भारत माँ तेरी हवा हर सांसो में है । तुझसे हमारे खून का रिश्ता है । हे भारत माता तेरी जय हो ।

तेरा रूप अनोखा है । हिमालय सुन्दर मुकुट है जो सबसे ऊँचा है । (मस्तक पर) चमक रहा हैं । नदियों की धारा में मुखड़ा झिलमिला रहा है । जल भरे बादल वर्षा करते हैं । मलयगिरि से आने वाली हवा पंखा झलती है । बसन्त ऋृतु हर वर्ष तेरे घर आंगन को सजाती है । तेरे चरण चूमने को समुद्र व्याकुल होकर उमड़ा आता हैं। भारत माता तेरी जय हो । तेरी हम जय - जयकार करें ।

सबके भले के लिए हम जिएँ और मरें , यही हमारी परिपाटी हो । इस बात की कहानी रणथम्भोर कहता है । हल्दीघाटी का मैदान इसका गवाह है । चम्बल और माही नदियों के जल से (बांध बांधकर) देश का

विकास हुआ । देश के विकास के लिए मेहनत करने वालों में हम नाम लिखाएँ और सम्मान पाएँ । हे भारत माता । तेरी जय हो । तेरी हम जय - जयकार करें ।

अभ्यास

1. आक्षरिकता (उच्चारण) का अभ्यास : -

शब्द		उच्चारण
1.	प्यारा	प्या + रा
2.	व्याकुल	व्या + कुल
3.	चम्बल	चम् + बल
4.	सुन्दर	सुन् + दर
5.	चेहरा	चेह् + रा
6.	रणथम्भोर	रण + थम + भोर
7.	हिमालय	हिमा + लय
8.	हल्दी	हल् + दी

2. कठिन शब्दों का वागडी में अर्थ : -

हिन्दी	वागड़ी
जन्म भूमि	जलम धरती
धरती माता	धरती माता
तुतलाना	तुतलु बुलवु

हिन्दी	**वागड़ी**
प्यारी बोली	वाली बुली
आंगन	आंगणु
रक्त	लुई
चमक	समक
मुखड़ा	मुहु
सजल	हाते पाणी
मलय पवन	टाडो वायरो
उपवन	वगीसो
व्याकुल	घबरावु
परिपाटी	रित - रिवाज
साक्षी	हाकी
यश	जस
मेहनत	मेणत
नित	दाडु

3. **व्याकरण का अभ्यास** : -

नीचे दिये गए नमूने के आधार पर परिवर्तन कीजिए -

एक वचन	**बहुवचन**
पंखा	पंखे
मुखड़ा	______
झण्डा	______
लड़का	______

4. प्रेरणार्थक क्रियाओं का ज्ञान : -

क्रियाएं			वाक्य
क --	खेलना	(1)	लड़के मैदान में खेल रहे थे।
ख --	खिलवाना	(2)	रमेश लड़कों को खेल खिलवा रहा था।
क --	बोलना	(1)	लड़के कक्षा में गिनती बोल रहे थे।
ख --	बुलवाना	(2)	- - - - - - - - - - - - - - - - - -।
क --	सीखना	(1)	छात्राएँ गाना सीख रही थीं।
ख --	सिखलाना	(2)	- - - - - - - - - - - - - - - - -

5. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यान से पढ़ो और समझो : -

1 - तेरी गोदी में जनमें हम , अपनी आँखे खोलीं ।
2 -- तेरा अन्न और जल पाया, माँ हम इतने बड़े हुए।
3 - सुन्दर मुकुट हिमालय तेरा , सबसे ऊँचा चमक रहा।
4 - सबके हित के लिए जिएँ हम , और मरे यह परिपाटी।

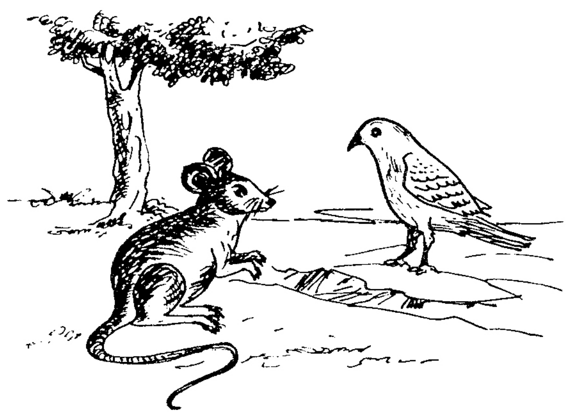
उपरोक्त पद्यांश कोपढ़ कर निम्न लिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1 - हमने किसकी गोद में जन्म लिया है ?
2 - बड़े होने के लिए हमने भारत माँ से क्या पाया ?
3 - कवि ने हिमालय को भारत का मुकुट क्यों कहा है ?
4 - हमारे देश की परिपाटी क्या है ?

★★★★

पाठ - 2

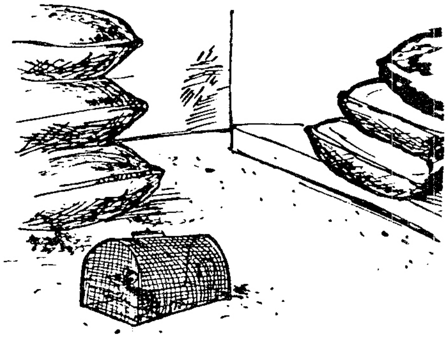
चिड़िया और चूहा



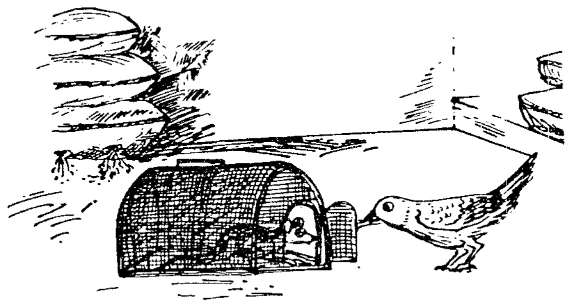
एक चूहा और चिड़िया थे । वे दोनों मित्र थे और साथ साथ रहते थे । जो कुछ भी मिलता उसे आपस में बाँट कर खाते थे । चूहा उछल कूद करता और चिड़िया गाना गाती थी । एक दिन दोनों घूमते हुए एक अनाज के भण्डार में पहुँच गए । विभिन्न प्रकार का बहुत सा अनाज देख कर चूहा उछल कूद करने लगा । चूहे ने चिड़िया से कहा - चलो उस घर में चलें, कुछ खा पी लें।

चिड़िया को उसकी माँ की बात याद आ गई । बिना पूछे किसी के घर में घुसना अच्छी बात नहीं । उसने चूहे से कहा - भैया । यह घर अपना नहीं है । दूसरे के घर में बिना पूछे खाना ठीक नहीं है।

चूहे ने कहा - तुम फिक्र मत करो , आओ । यहां कौन देखने वाला है ? इतना कह कर चूहा अनाज के भंडार से गेहूँ , बाजरी खाने लगा । भंडार में जगह -जगह अनाज बिखरने लगा तथा चूहे की मेंगनियाँ भी दिखाई देने लगीं ।



एक दिन भंडार के मालिक ने देख लिया और बोरियों के बीच में चूहे दानी रख दी । उसमें चुपड़ी रोटी डाल दी । चूहा चुपड़ी रोटी देख, चूहेदानी में घुसा और कैद हो गया । तभी चिड़िया वहाँ आई । उसने देखा चूहा चूहेदानी में बन्द है । वह सारी बात समझ गई। वह चींची करने लगी और बोली भैया तूने मेरी बात नहीं मानी , लालच बुरी बला है । चिन्ता मत कर । ठहर, मैं कोई उपाय करती हूँ । उसने चोंच से पतरा ऊँचा किया, चूहे को बाहर निकाला और फिर दोनों हंसी खुशी साथ साथ चल दिये ।



1 - उच्चारण कीजिए : -

चिड़िया	-	चि / ड़ि / या
घबराना	-	घब् / रा / ना
कुतरना	-	कु / तर् / ना
चूहेदानी	-	चू / हे / दानी
पसन्द	-	प / सन्द
अन्दर	-	अन् / दर
भण्डार	-	भण् / डार
उन्हें	-	उन् / हें

2 - **कठिन शब्द : -**

हिन्दी	**वागड़ी**
उछल - कूद	डाकवु - कुदवु
फिक्र	फिकर
भण्डार	गोदाम
चूहेदानी	पाँजरू
विभिन्न	कईक
बिखरना	वखेरावु
बोरी	बूरी
चुपड़ी	सुपडी
लालच	लालेस
उपाय	तरीको
गृह - स्वामी	घेर नो मालिक

3 - **कठिन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग : -**

हिन्दी	**वागड़ी**
1 - उछल - कूद -	
चूहा उछल कूद कर रहा था।	उँदरो डाकवु - कुदवु करतो अतो।
2 - फिक्र -	
चिड़िया ने कहा तुम फिक्र मत करो ।	सकलजे केझु के तू सिन्ता नके करे।
3 - मेंगनियाँ -	
भण्डार में चूहे की मेंगनियाँ दिखाई दीं ।	गोदाम माए उँदरा नी लीडी देखणी ।

4 - भण्डार -

चूहेदानी -

भण्डार के बीच में चूहेदानी रखी ।	गोदाम ने वेस माए पाँजरु मिलयु ।

5 - हंसी - खुशी -

चिड़िया और चूहा दोनों हंसी खुशी से रहते थे ।	सकली ने उँदरो बेजणं आहत ने राजी हूँ रेतँ अतँ ।

6 - विभिन्न -

भण्डार में विभिन्न प्रकार की सामग्री थी ।	गोदाम माए कईक जात नु सामन अतु।

7 - बिखर -

चावल बिखर गए थे ।	सोका वेराई गिया अता ।

8 - बोरियाँ -

गेहूँ की बोरियाँ भरी हुई थी।	गउ नी बुरी भरीली अती

9 - चुपड़ी -

रोटी घी से चुपड़ी हुई है।	रोटो घी हूँ सूपड़ेलो है।

10 - उपाय -

चिड़िया ने चूहे को निकालने का उपाय किया ।	सकलजे उँदरानै काडवा हारू तरकीब किदी।

4. जैसे "चूहा" से "चूहे " , " चिड़िया " से " चिड़ियाँ "बहुवचन बनते है। उसी प्रकार नीचे शब्दों से बहुवचन शब्द बनाओ -

1 - गाना - - - - - - - - -
2 - कट्टा - - - - - - - - -
3 - गन्ना - - - - - - - - -
4 - पिंजरा - - - - - - - - -
5 - चूहे-दानी - - - - - - - - -
6 - रोटी - - - - - - - - -
7 - घोंसला - - - - - - - - -
8 - वृक्ष - - - - - - - - -
9 - घर - - - - - - - - -
10 - बहन - - - - - - - - - -
11 - दवा - - - - - - - - - -

इस अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ो -

पराए घर में घुस कर इस तरह खाना मुझे तो नहीं जँचता । मेहनत कर खाने का आनन्द वह जानती थी । चिड़िया को माँ की बात याद आ गई " बिना पूछे दूसरे के घर में घुसना अच्छी बात नहीं । "

एक दिन गृह स्वामी सारी बात समझ गया । भण्डार के बीच में पिंजरा रख दिया और उसमे रोटी का टुकडा डाल दिया । चूहा टुकडे के लांलच में पिंजरें में कैद हो गया । चिड़िया ने कहा , " खैर , अब घबरा

मत । कोई न कोई उपाय करती हूँ ।" चिड़िया ने अपनी चोंच से पतरा दबाया और चूहे को निकाल दिया ।

निर्देश : -

दिये गये गद्यांश को पढ़कर इन प्रश्नों के उत्तर लिखो ।

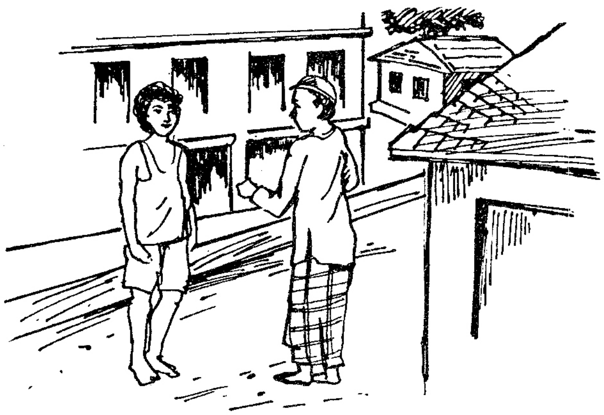
1 - चिड़िया को माँ की कौन सी बात याद आ गई ।
2 - भण्डार की दशा देखकर गृहस्वामी क्या समझा ?
3 - मेहनत का आनन्द कौन जानता था ?
4 - गृहस्वामी ने चूहे से छुटकारा पाने के लिए क्या किया?
5 - रोटी का टुकड़ा पाने के लालच में चूहे पर क्या बीती ?
6 - चिड़िया ने अपने मित्र को पिंजरे से कैसे निकाला ?

★★★★

पाठ - 3

बैंक और बिजलीघर

शिव - नमस्ते सलीम भैया । यहाँ कब आये ।



सलीम - एक पखवाड़ा हो गया है। गाँव में जब भूखे मरने की स्थिति हो गई तो पिताजी ने शहर चलकर कोई धंधा ढूँढने को कहा। छोटे भाई करीम को भी माध्यमिक विद्यालय में भर्ती कराना है। माँ की भी यही राय थी ।

शिव - यहाँ कहाँ रह रहे हो ?

सलीम - घंटाघर के पास दो कमरे किराये पर लिए हैं ।

शिव - पिताजी काम धंधे पर लगे या नहीं ?

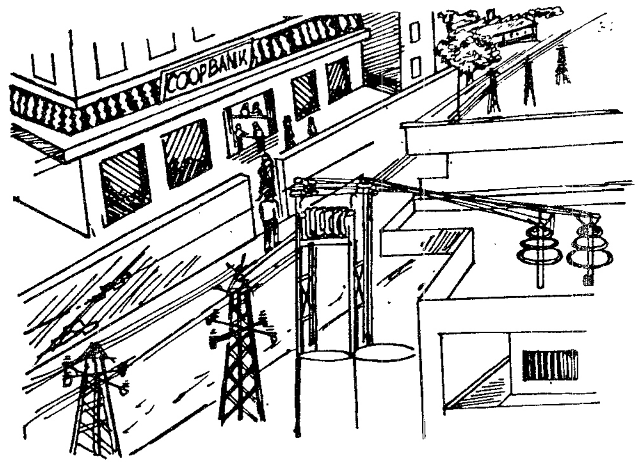
सलीम - पिताजी को बिजली घर में फोरमेन का काम मिल गया है। तुम्हारे पिताजी क्या कर रहे हैं?

शिव - वे सहकारी बैंक में सहायक प्रबन्धक हैं।

सलीम - यह बैंक कहाँ पर है?

शिव - बैंक और बिजली घर एक दूसरे के पास हैं । यह दोनों ही जनता के लिये बड़े लाभकारी भी हैं।

सलीम - लाभकारी कैसे है?



शिव - बिजली हमारे लिए बहुत जरूरी है । बिजली से रोशनी मिलती है, कारखाने चलते हैं। छोटे - मोटे उद्योग धंधें चलते हैं। जैसे अनाज पीसने की चक्की , वाटर पम्प, लकड़ी चीरने का आरा मशीन, कपड़े बुनने के कारखाने आदि। बिजली न हो तो देश को भारी धाटा हो जाए। बिजली विकास की रीढ़ है।

सलीम - सहकारी बैंक से क्या लाभ हैं?

शिव - बैंक हमें पूंजी देते हैं । पूंजी बिना कल - कारखाने नहीं चल सकते हैं ।

सलीम - पूंजी क्या है ?

शिव - पूंजी पैसा है। बिना पैसों के कोई भी कार्य करना सम्भव नहीं है। सहकारी बैंक लोगों की आवश्यकता, उन्हें ऋण देकर पूरी करते हैं। किसान और उद्योग धन्धे वाले ऋण लेते हैं ।

जिन्हें वे अपनी सुविधानुसार वापस बैंक को चुका देते हैं। बैंक हमारी सेवा के लिए ही कार्य करते हैं।

प्रशन - 1 उच्चारण उभ्यास

नमस्ते	न / मस् / ते
सप्ताह	सप् / ताह
माध्यमिक	मा / ध्य / मिक
व्यवस्था	व्य / वस् / था
धन्धे	ध्न / धे
चिट्ठी	चिट् / ठी
विद्यालय	वि / द्या / ल्य
घंटाघर	घण् / टा / घर
उत्पादन	उत् / पा / दन
प्राथमिक	प्राथ् / मिक
तरक्की	त / रक् / की
काश्तकार	काश्त / कार
नुकसान	नुक् / सान

2 कठिन शब्द

हिन्दी	**वागड़ी**
नमस्ते	राम -राम, जे राम, जैरामजी नी
पखवाड़ा	पनरादाड़ा
प्रबंध	वेवस्ता
बिजलीघर	बिजलीघेर
लाभ	फ़ायदो

रोशनी	अजआळु
ऋण	करजो

3 व्याकरण का अभ्यास

लिंग परिवर्तन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पिताजी	माताजी
भैया	भाभी
चाचा	चाची
मामा	मामी
आदमी	औरत
शिव	पार्वती

4 रिक्त स्थानों में सही शब्द भरो -

(जुगाड़, अता - पता, ऋण)

1. पास पड़ोस में भी पूछताछ की पर किसी ने ---------- नहीं बताया।
2. काम धंधे का ------------ बैठा ।
3. कृषक बैंक से ------------ लेते हैं ।

मुहावरे	**वाक्यों में प्रयोग**
जुगाड़ बैठाना	काम बनाना
	सलीम के पिताजी ने काम धन्धे का जुगाड़ बैठा दिया ।

मुहावरे	**वाक्यों में प्रयोग**
काम धन्धा ढूँढना	काम की तलास करना। मैं काम धन्धा ढूँढ रहा हूँ।
घाटा होना	नुकसान होना युद्ध होने से देश को आर्थिक घाटा होता है।
लाभकारी होना	हितकर होना दूध स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

4 प्रश्न अभ्यास कार्य -

1. सलीम के पिताजी को गाँव छोड़कर शहर में क्यों आना पड़ा?
2. बिजली से कौन कौन सी मशीनें चलती हैं ?
3. पूंजी किसे कहते हैं ?
4. उद्‌योगों के लिए पूँजी की व्यवस्था कौन करता है ?
5. "बैंक तो लोगों की सेवा के लिए ही हैं ।" वे सेवाएं क्या हैं ? बताओ

5 अनुच्छेद को पढ़ो

सलीम के पिताजी को काम धन्धे के लिए शहर में जाना पड़ा। उन्हें बिजली घर में फोरमेन का काम मिल गया । उसके पास ही शिव के पिताजी भी बैंक में सहायक प्रबन्धक हैं । दोनों ही जनता के लिए लाभ कारी हैं ।

बिजली से घरों में रोशनी होती है । बड़े बड़े उद्योग - धन्धे कारखाने, मोटर, आटा चक्की आदि बिजली से ही चलते हैं । बैंक किसान को ऋण देता है । उध्योगों के लिए पूँजी की व्यवस्था करता है ।

बैंक लोगों को रुपया उधार देता है और जमा करता हे । ये सेवाएँ बैंक ही करता है ।

ऊपर के अनुच्छेद को पढ़कर निम्न लिखित प्रश्नों का उत्तर लिखो।

1. बिजली विकास के लिए आवश्यक कैसे हैं, समझाइये ?
2. सलीम के पिताजी बैंक में क्या काम करते थे ?
3. बैंक किसानों के लिए क्या सेवा करता है ?
4. पूँजी किसे कहते हैं ।

★★★★

पाठ - 4

बुध्दि की जीत



एक घना जंगल था । उस जंगल में एक बरगद का पेड़ था । तरह -तरह के रंग बिरंगे पक्षी उस पर रहते थे । उनमें बया के कई जोड़े भी थे । तेज गर्मी से सभी पक्षी परेशान थे । बया के जोड़ों ने जब देखा कि बरसात आने वाली है, तब उससे बचने के लिए उन्होंने घोंसले बनाने शुरू कर दिये।

तभी कहीं से उछलता कूदता एक बन्दर भी उस पेड़ पर आ बैठा । बयों को घोंसला बनाते देख कर बंदर को आश्चर्य हुआ । उसने एक से पूछा - "तुम लोग यह क्या कर रहे हो ?" बया ने कहा बरसात से बचने के लिए घोंसले बना रही हूँ।तुम भी अपने लिए घोंसला बना लो न ।

"चुप रह नादाना । " बन्दर ने गुस्से से कहा । मैंने कभी घोंसला बनाया है जो अब बनाऊंगा । नहीं , मैं घोंसला नहीं बनाता।बन्दर की घुडकी सुनकर बया सहम गई । वह वहाँ से उड़कर चली गई और अपने काम में लग गई ।

कुछ दिनों बाद मूसलाधारा वर्षा होने लगी । पानी बरसने लगा तो रुकने का नाम नहीं । ऐसे में पानी से भीगता बन्दर फिर से उसी पेड़ पर आ बैठा । पेड़ पर शान्ति थी । लेकिन कभी - कभी किसी घोंसले से चिड़ियों के बच्चों की चीं - चीं जरूर सुनाई दे जाती थी



बच्चों का चह चहाना सुनकर बन्दर ने सोचा , "ओह । इसका मतलब है कि ये सभी घोंसलों में दुबके बैठे हैं और मैं अकेला भीग रहा हूँ । बन्दर इस डाल से उस डाल पर कूद - फाँद करता हुआ घोंसलों को तोड़ने लगा। बरगद के पेड़ पर त्राहि - त्राहि मच गई । जैसे भूकम्प आ गया हो ।

बन्दर अपनी करनी पर खुश हो रहा था ।

बेचारे पक्षी परेशान थे । बन्दर की करनी का जवाब भी तो नहीं दे सकते थे । बया से नहीं रहा गया । वह उड़कर पक्षियों के पास पहुँची और बोली मैं बात करती हूँ बन्दर से । यदि तरकीब काम आ गई तो वह भी हमेशा याद रखेगा ।

" मगर क्या तुम बन्दर को सबक सिखा सकोगी ? अगर सिखा सको तो हम सब भी तुम्हारे साथ हैं । " बया बन्दर के पास गई और बोली-



बहुत अच्छा किया । सभी घोंसलें तोड़ दिये पर एक घोंसला तो रह ही गया। बया ने मधु मक्खी के छते की ओर इशारा करते हुए कहा। बन्दर ने लपक कर उसको हाथ लगाया तभी ________बन्दर के चीखने चिल्लाने की आवाजें आनी शुरू हुई तो सभी पक्षी समझ गए कि बया की तरकीब काम कर गई। वे कहने लगे " बन्दर को बया ने अच्छा सबक सिखाया ।

1 - उच्चारण का अभ्यास -

उछलना	उ / छल / ना
घोंसला	घोंस / ला
भूकम्प	भू / कम्प
चीखने	चीख / ने
घुड़की	घुड़ / की

2 - कठिन शब्द

हिन्दी	**वागड़ी**
पक्षी	पंखारू
वोंसला	गुहळो
पहचानना	उलकवु
बनाना	बणावु / बणावणु

हिन्दी	वागड़ी
त्राहि - त्राहि	खुब तवा थावु
ठिठुरना	कापवु / कांपणु

3 - मुहावरे

1. करतूत का मजा चखाना
2. लेने के देने पड़ना
3. त्राहि त्राहि मच जाना
4. भूकम्प आना

4 - वचन परिवर्तन

एक वचन	बहुवचन
पहाड़ी	पहाड़ियाँ
घोंसला	घोंसले
डाली	------
बच्चा	------

5 - सोचो और बताओं -

1. बयों ने घोंसले कब बनाये ?
2. बन्दर ने पेड़ पर शांति देख कर क्या किया ?
3. पक्षियों के समूह में बया ने क्या कहा ?
4. बन्दर चीखने चिल्लाने क्यों लगा?
5. कौन कौन से पक्षी घोंसला बनाते हैं ?

6 - नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर अभ्यास प्रश्नों का उत्तर दो -

बरसात से बचने के लिए बया ने घोंसले बनाये ।
बया को घोंसले में देख कर बन्दर को गुस्सा आया ।
बया ने सभी घोसले तोड़ दिये । मूसलाधार वर्षा हो रही थी ।
बया ने बन्दर को मधु मक्खी के छते की ओर इशारा करते हुए उसे तोड़ने के लिए कहा और वह चिल्लाने लगा ।

1. वर्षा से बचने के लिए बया ने क्या किया?
2. बन्दर को क्यों गुस्सा आ गया?
3. बया ने कौनसा सबक सिखाया जिससे बन्दर चिल्लाने लगा ?
4. मूसलाधार वर्षा किसे कहते हैं ?

★★★★

पाठ - 5

गुरू और शिष्य

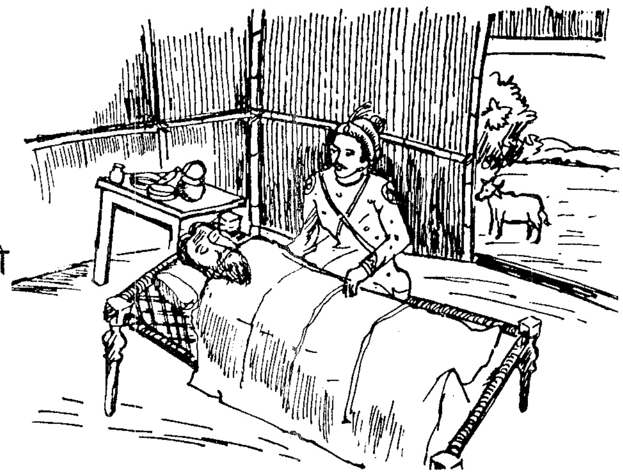


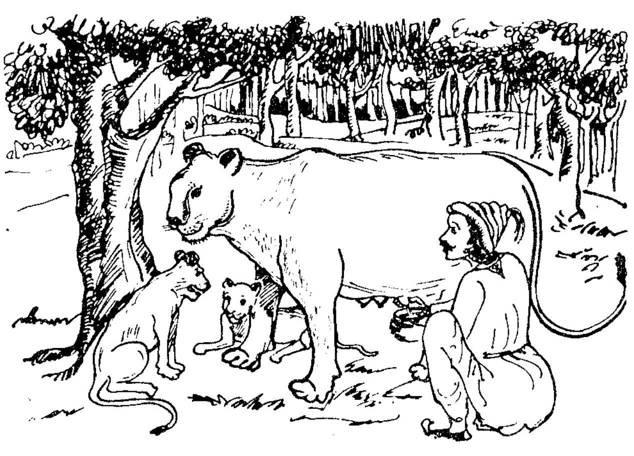
गुरू का आश्रम एकान्त वन में था । जहाँ दूर -दूर से विद्यार्थी पढ़ने आते थे । एक दिन गुरू जी के पेट में दर्द उठा । गुरू जी को दर्द से छटपटाते देख शिब्बू चिन्तित हो गया । कई दवाइयाँ दी गई किन्तु दर्द कम नही हुआ।

शिब्बू ने गुरू जी से कहा कि जिस दवा से आपका दर्द दूर हो सकता है उसके बारे में बताइये । मैं उसे ले आऊँगा । गुरू जी ने कहा कि यह दर्द बहुत पुराना है, इसकी दवा मिलना इतना आसान नहीं है । शिब्बू ने कहा मेरे लिए कोई भी काम असम्भव नहीं है । आप दवा बताइये, उसे लाना मेरा काम है।

गुरू जी के बहुत मना करने के बाद भी शिब्बू नहीं माना और दवाई लाने को कहता रहा । तब गुरूजी ने बताया कि बचपन में उन्हें जब कभी दर्द उठता तो उनके गुरूजी उन्हें शेरनी का दूध दिया करते थे ।

शिब्बू ने यह सुना । गुरूजी को नमस्कार किया और घने अंधेरे जंगल में एक हाथ में कटोरा व एक हाथ में तलवार लिए निकल पड़ा ।बादल व बिजली की चमक में शिब्बू ने एक पेड़ के नीचे खडी शेरनी को देखा । वह अपने दो बच्चों को दूध पिला रही थी । शिब्बू की भौंहें खिल गई और बेधड़क आगे बढ़ा ।





शेरनी के कान पकड कर शिब्बू ने इस तरह दूध निकालना शुरू किया, जैसे पालतू गाय का दूध निकाल रहा हो । शिब्बू दूध का कटोरा लेकर आगे बढ़ा ही था कि सामने गुरू रामदास मुस्कराते दिखाई पड़े । यही वीर बालक शिब्बू आगे चलकर छत्रपति शिवाजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

1. उच्चारण एवं लिखने का अभयास -

शब्द	उच्चारण
शिष्य	शि / ष्य
चिन्ता	चिन् / ता
शक्ति	शक् / ति
सन्नाटा	सन् / ना / टा
छटपटाहट	छट् / पटा / हट
मुस्कुराते	मुस् / कुरा / ते
डरावनी	ड / राव / नी

2. कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
आश्रम	आसरम , (जगा जेआँ साधु रें)
छटपटाना	तड़पवु
शक्ति	ताकत
दर्द	दरद
असम्भव	मुसकल
अँधकार	अँदारु
सन्नाटा	हण्णाटो
जोखिम	खतरो, मुसिपत
प्रसिद्ध	जाणीतो

3. **कुछ संज्ञाओं का ज्ञान**

" हट " और " वट "लगा कर क्रि्याओं से संज्ञाएँ बनाइए :

1. छटपटाना छटपटाहट
2. बड़बड़ना ------------
3. चिल्लाना ------------
4. घबराना ------------
5. सजाना सजावट
6. दिखाना ------------
7. बनाना ------------

4. **सही जोड़ बनाइए**

	विशेषण			**विशेष्य**		
(क)	घना	______	(1).	शेर	______	(6)
(ख)	गरजते	______	(2)	गाय	______	( )
(ग)	चमकती	______	(3)	आवाज	______	( )
(घ)	दिलदहला देने वाली	______	(4)	बादल	______	( )
(ङ)	पालतू	______	(5)	बिजली	______	( )
(च)	जंगली	______	(6)	अंधकार	______	( )
(छ)	पुराना	______	(7)	दर्द	______	( )

क. गुरूजी के बीमार होने का समाचार सुनकर शिब्बू ने क्या किया ?

ख. जब शिब्बू दूध लेने निकला तब रात का वातावरण कैसा था ?

5. **विलोम शब्द लिखिए -**

जंगली	पालतू
प्रकाश	--------
असम्भव	--------
दु:खी	--------
आसान	--------

6. **सोचो और बताओं**

रात्री में शेरनी पेड़ के नीचे क्या कर रही थी ?

निम्न में सही शब्द का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखो -

(क) शेरनी सो रही थी ।

(ख) शेरनी खाना खा रही थी ।

(ग) शेरनी अपने बच्चो के साथ भाग रही थी ।

(घ) शेरनी अपने बच्चों को दूध पिला रही थी ।

सही उत्तर ( )

7. **" उनुच्छेद को पढ़ो : -**

गुरूजी दर्द से छटपटाने लगे । गुरूजी की छटपटाहट देखकर शिष्य के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ उभर आई । गुरुदेव । आपने मेरे इस हाड़ माँस के शरीर में वह शक्ति भर दी है कि मेरे लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है।

" गुरुदेव , आप यहाँ । मैं तो दवा लेकर आ ही रहा था ।" यही वीर बालक शिब्बू आगे चल कर छत्रपति शिवाजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

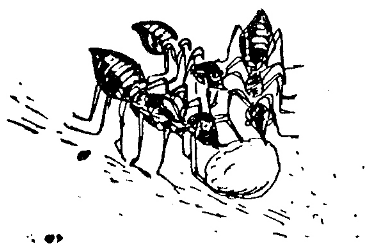
उपरोक्त अनुछेद को पढ़ कर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

1. शिब्बू के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ क्यों उभर आई ?
2. गुरूजी के छटपटाने का क्या कारण था ?
3. बालक शिब्बू आगे चल कर किस नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

★★★★

पाठ - 6

चींटी और कुत्ते (कीड़ी ने कुत्तरँ)

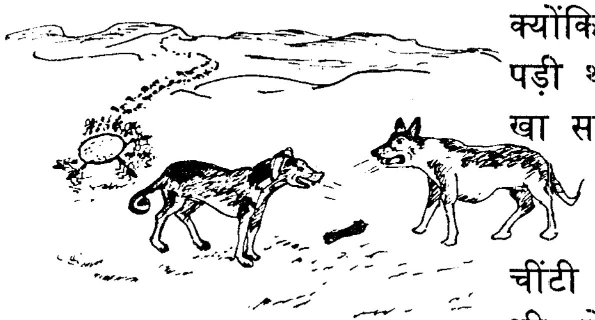


अपने बिल से चींटी बाहर निकली। चींटी रानी अकेली थी । चींटी को सबके लिए अन्न दाना पानी खोजना था । वह इधर उधर रास्तों में घूसी। उसने एक रोटी का टुकड़ा देखा । रोटी का टुकड़ा उससे कई गुना भारी था ।

चींटी ने टुकड़े को ध्यान से देखा। वह बहुत भूखी थी, लेकिन रोटी के टुकड़े को नमुँह लगाया न खाया ।

उसने क्यों नहीं खाया ? क्योंकि उसे सभी के साथ बाँटकर खाने की प्रेरणा मिली थी । चींटी ने उस टुकड़ें को ले जाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं उठा पायी । बार बार उसने कोशिश की लेकिन असमर्थ रही । असमर्थ होने पर भी वह नहीं घबराई।

वह अपने घर चली और अपना पूरा समूह ले आयी । पूरे समूह के साथ उस टुकड़े को उठाया और ले गई ।



पास ही दो कुत्ते झगड़ रहे थे क्योंकि उनके बीच में एक हड्डी पड़ी थी । वे उस हड्डी को नही खा सकते थे ।

चींटी भी एक जीव है और कुत्ता भी, लेकिन इनके व्यवहार में बहुत अन्तर है । चींटी बाँटकर खाने वाले स्वभाव की है और कुत्ता झगड़ालू स्वभाव का है ।

चींटी में सामाजिक प्राणी के गुण है और कुत्ते का स्वभाव झगड़ालू होता है ।

1 - उच्चारण अभ्यास -

शब्द	
खोजकर	खोज / कर
लुढ़काकर	लुढ़ / का / कर
झगड़ना	झ / गड़ / ना
गुर्राना	गुर् / रा / ना
बाँटना	बाँट / ना

2 - कठिन शब्द

हिन्दी	**वागड़ी**
जुटाना	एकटु करवु
खोजकर	खोजीनै
मार्ग	वाट
प्रेरणा	हिक
व्यवहार	वरताव
अन्तर	फरक
झगड़ना	वळगावु
प्राणी	जीव

3 - शब्दों को जोड़िये -

(बार , तिगुना , बीच , पास , नीचे ,पानी , पार)

जैसे -

दाना - पानी

दुगुना -

घर -

आस -

आर -

बीचों -

ऊपर -

3 - बहुवचन बनाइये - जैसे:-कली - कलियाँ

चींटी -

रानी -

रोटी -

हड्डी -

टुकड़ा -

झगड़ा -

कुत्ता -

4 - नीचे लिखे उदाहरण को देख कर वाक्यों को पूर्ण करो -

जैसे- न तो वह खाता था - और न दूसरों को खाने देता था ।

(क) न तो वह जाता था और ----------------।

(ख) न तो वह काम करता था और -------------।

(ग) न तो वह पीता था ---------------------।

(घ) न तो वह रहता था ---------------------।

(ङ) न तो वह खे लता था -------------------।

5 - सोचो और बताओ -

1 - चींटी में कौन - कौन से गुण होते हैं ?

2 - कुत्ते की कौन सी आदत तुम्हे पसन्द नहीं आती ?

3 - चींटी और कुत्ते के स्वभाव में कौनसा बड़ा अन्तर बताया गया है ?

4 - तुम चींटी और कुत्ते में किस स्वभाव का होना पसंद करोगे और क्यों ?

6 - नीचे लिखी पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1 - ये भी जीव , जीव चींटी भी ,
पर दोनों में कितना अन्तर ?
एक झगड़ता है खाने पर
खाना खाए एक बांट कर ।

क - ऊपर दी गई पंक्तियों का अर्थ लिखिये ?

ख - " पर दोनों में कितना अन्तर " यह किसके लिए कहा गया है ?

★★★★

पाठ - 7

ऊर्जा के स्त्रोत

ऊर्जा का अर्थ है, कार्य करने की शक्ति । शरीर में ऊर्जा पैदा करने के लिए हम पौष्टिक भोजन खाते हैं । खेल खेलने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है । खेलने से शरीर में पसीना आता है जिससे ऊर्जा खत्म हो जाती है । इसी तरह बढ़ई , लुहार, मजदूर आदि जो दिन भर मेहनत करते है, उस ऊर्जा के प्राप्त करने के लिए ही भोजन करते हैं । मनुय को पग पग पर ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है । चाहे सुई बनानी हो या वायुयान । मशीनें चलाने के लिए मनुष्य ने ऊर्जा के नये - नये स्त्रोतों की खोज की।ऊर्जा के कई स्त्रोत हैं जिनमें मुख्य हैं : –

1 - वायु : –

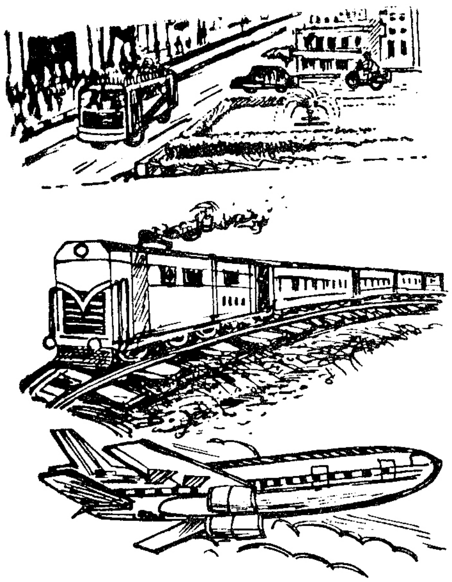
मनुष्य ने इसका उपयोग पवन चक्की बना कर किया । समुद्र में पालदार नावें भी हवा द्वारा चलने लगी ।



2 - भाप : –

मनुष्य ने भाप का पता खाना पकाते समय लगाया और इसकी

शक्ति को पहचाना । सबसे पहले भाप इंजन बनाया और रेल गाड़ियां चली, जलयान बनाये और समुद्र पर तैरने लगे ।



3 - पेट्रोलियम : -

यह ऊर्जा का मुख्य स्रोत है । मनुष्य ने जमीन को खोद कर इस स्रोत को खोज निकाला है। इससे मशीने अधिक शक्ति - शाली हो गई हैं । मनुष्य पेट्रोलियम अपनी सूझ बुझ से कई तरह से उपयोग में ले रहा है ।

जैसे-घर मेंमिट्टी का तेल , डीजल और पेट्रोल से ट्रक , रेल , भारी वाहन , स्कूटर, मोटर साइकिल आदि चलते हैं । वायुयान में पेट्रोल को और अधिक अच्छा बना कर काम लिया जाता है । इसके भंडार मांग के बढ़ने से कम होने लगे हैं ।

4 - कोयला : -

कोयले से विद्युत पैदा कर बडे बडे ताप विद्युत घर चलाए जाते हैं। इंजन आदि कोयले द्वारा ही अधिक चलते हैं ।

5 - जलविद्युत -

पानी रोकने से बड़े - 2 बांध बनाये जाते हैं और पानी के दबाव से विद्युत पैदा की जाती है । जल विद्युत से बड़े - 2 कारखाने भी चलाए जाते हैं ।

6 - परमाणु शक्ति : -

परमाणु शक्ति से परमाणु विद्युत घर बनाकर विद्युत तैयार की जाती है। इसके द्वारा घरों में प्रकाश व खेतों में सिंचाई होती है और कारखाने चलते हैं।

7 - गोबर गैस : -

गोबर गैस उत्पन्न करने के लिए गोबर गैस संयत्र लगाए जाते हैं । इससे चूल्हे जलाने एवं कुए पर पम्प चलाने के लिए ऊर्जा मिलती है और खाद भी । दोनों चीजें प्राप्त होने से आम के आम गुठली के दाम वाली बात हो गई ।

8 - गैस : -

पेट्रोल की खोज करते हुए मनुष्य ने गैस निकलते और पानी में इससे आग लगते देखा । इसे वड़वाग्नि कहते हैं । इसे भी बांध लिया और इकट्टा किया । आज गैस पर जो खाना घर घर में बनता है , वह यही है ।

9 - सौर ऊर्जा : -

मनुष्य ने अपनी बुद्धि से इसे खोज निकाला और कई उपयोग किये। यह कभी भी नहीं समाप्त होने वाली ऊर्जा है । इसका उपयोग रसोई में सौर चूल्हे द्वारा और विदुयुत बनाने में होने लगा है । अन्तरिक्ष में कृत्रिम उपग्रहों में भी सौर ऊर्जा से ही विद्युत प्राप्त की जाती है ।

1. **कठिन शब्द**

हिन्दी	वागड़ी
वायुयान	पाँजरू / अवाजाज
खोज	हुजवु
साधन	सादन
पवन चक्खी	वायरा वाळी सकी
भाप	वराल
जलयान	जाज
मिट्टी का तेल	घासतेल
डीजल	डीजल
परिवर्तन	बदलवु
स्टोव	इस्टोव
उत्तम	असल
भंडार	गोदाम
बांध	पाल
विद्युत	बिजली
प्रकाश	अजवाळु

हिन्दी	वागडी
प्रबंध	बन्दोबस्त
बुद्धि	दिमाक
अन्तरिक्ष	अंगास , हणगाँ
कृत्रिम	बणावटी

2. इनके साथ कौन कौन से ऊर्जा स्रोत संबधित कर सकते हो ?

1 - रेल ______________________
2 - कार ______________________
3 - समुद्रीजहाज ______________________
4 - मोटर साइकिल ______________________
5 - ट्रेक्टर ______________________
6 - पानी का पम्प ______________________
7 - आटे की चक्की ______________________

3. समझो और बताओ

1 - जीवन में मनुष्य को पग पग पर किसकी आवश्यकता होती है?
2 - ऊर्जा कितने प्रकार की होती हैं ?
3 - खाना पकाने के लिए कौन सी ऊर्जा काम आती है ?
4 - पेट्रोलियम कहाँ से प्राप्त करते हैं ?
5 - जल से कौन सी ऊर्जा प्राप्त होती है?
6 - गावों में कौन सी ऊर्जा का उपयोग होता है ?
7 - आम के आम और गुठली के दाम किसके के लिए कहा है?

4. **दिए गए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखो -**

खाना पकाने से लेकर अन्तरिक्ष में यान भेजने तक ऊर्जा की आवश्यकता होती है । सुई बनाने से लेकर वायुयान उड़ाने तक की इन मशीनों को भी ऊर्जा चाहिए । मनुष्य ने अपनी सूझ बूझ से कई तरह की ऊर्जा उत्पन्न कर ली । पेट्रोलियम को जमीन से खोद कर निकाला है ।
इससे पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल और कई चीजें बनती हैं । पेट्रोल की खोज से ही मनुष्य को गैस प्राप्त हुई । समुद्र से पेट्रोल और गैस दोनों ही निकाले जाते हैं । जिसे लोग वड़वाग्नि कहते हैं । मनुष्य ने इसे भी बाँध लिया है। इससे रसोई बनती है ।

प्रशन : -

1 - ऊर्जा की आवश्यकता कहाँ - कहाँ होती है ?

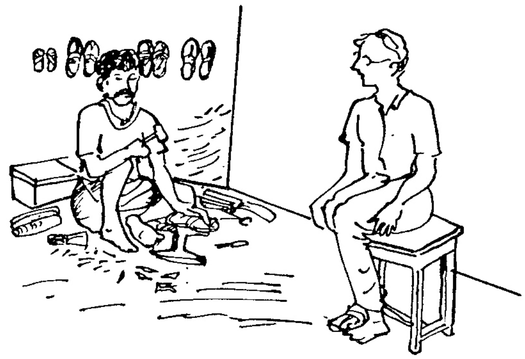
2 - पेट्रोलियम से क्या क्या प्राप्त होता है ?

3 - वड़वाग्नि किसे कहते हैं ?

★★★★

पाठ - 8

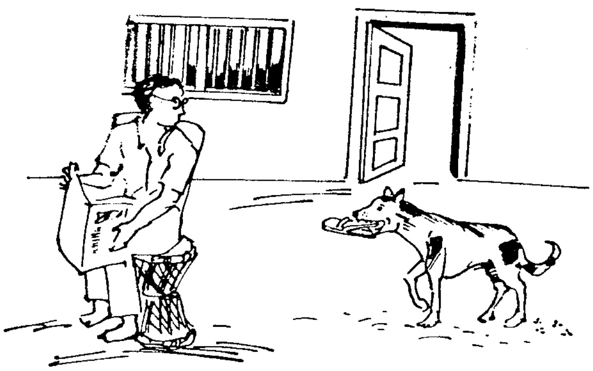
चक्कर चप्पलों का



चप्पलें घसीटते - घसीटते मुझे उन पर क्रोध आया । चप्पलें पुरानी थी कभी - कभी सड़क के बीच में भी टूट जाती थी ! उसे ठीक करवाने बार -बार मौची के पास जाना पड़ता था ।



कभी -कभी मौची हँसकर कह बैठता "आ गए बाबूजी, लाइए पहले आपकी चप्पलों का इलाज कर दूँ । रोज -रोज की परेशानी से तंग आकर आखिर एक दिन मैं चमचमाते नये जूते खरीद लाया ।



पुरानी चप्पलों से छुटकारा पाने के लिये इनको उठा - कर घर के बाहर नाली के पास रख आया । लेकिन सुबह मेहतर झाड़ू निकालने आयी । उसने मेरी चप्पले पहचान ली और घर वापस भिजवा दी ।

फिर एक बार निर्णय लिया और इनको पुराने अखबार के कागज में बांधकर चौराहे के बीच रखकर छुट्टी पाई । लेकिन मेरा साहब जादा जब खेल कर वापस आ रहा था तो उसकी नजर उस अखबार पर पड़ी जिस पर मेरा नाम लिखा था । उसे पढ़ कर चप्पलों को वापस घर ले आया ।

थोडी देर बाद मन ही मन निर्णय लिया कि सुबह घूमने जाऊँगा और किसी पेड के ऊपर रख आऊँगा । सवेरे जब घूमने निकला तो चप्पलों को ले जाना न भूला । एक नीम के पेड पर बण्डल रखकर उतर ही रहा था कि कजोडीमलजी आ गए उन्होंने पूछा - "अरे छदम्मीलालजी । आप यहाँ क्या कर रहे हैं ? "

"कुछ नहीं भाई , दतुन तोडने के लिये चढ़ा हूँ ।"

"ओह् हो । आप भला क्यों कष्ट करते हैं । ठहरिये, मैं तोड देता हूँ " देखते ही देखते गिरगिट की तरह ऊपर चढ़ गए और बोले - " वाह, भाई वाह । देखा न । मैं नहीं आता तो आपका यह बण्डल तो ऊपर ही रह जाता संभालिए इसे भी।"

बहुत सोच विचार कर निर्णय लिया कि शाम को जब कार्यालय से लौटूँगा तो नदी किनारे गड्ढ़ा खोदकर वहाँ इन्हें गाड़ आऊँगा ।

चप्पलों को गाड कर प्रसन्न मन से घर लौटा तो मेरे पीछे पीछे कबरा कुत्ता भी चप्पल मुहँ में दबाए आ धमका । उसने चप्पल मेरे सामने रखी और दुम हिलाने लगा, जैसे उसने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया हो ।

मैं माथापीट कर रह गया ।

1. **उच्चारण - अभ्यास**

चप्पल	चप् / पल्
गुस्सा	गुस् / सा
मरम्मत	म / रम् / मत्
छुट्टी	छुट् / टी

2. **कठिन शब्द**

हिन्दी	वागड़ी
चक्कर	सक्कर
चप्पल	सप्पल
घसीटना	घाहड़वु
मरम्त	हन्दाड
मेहतरानी	भंगेण
निर्णय	फैसलो
प्रसन्न	खुस

3. ऐसे शब्दों के जोडे बनाओ जो बोल - चाल में साथ - साथ आते हों -

सोच विचार — **सोच और विचार**

दिन ______

घर ______

हाव ______

हाट ______

भाई ______

माता ______

(संकेत - बाजार , बहिन , पिता , रात , बाहर , विचार, भाव)

4. देए गए नमूने के अनुसार बदलो

चप्पल — चप्पलें

दवात ______

पुस्तक ______

मेज ______

बात ______

चाल ______

गिलास ______

रात ______

किताब ______

पेंसिल ______

5. एक बोले , सभी लिखें -

सैकड़ों , फूँकते , अड़ियल टट्टू , चौराहा, कष्ट , बंडल , प्लास्टिक, स्पंज , निर्णय , पिण्ड , कल्याण ।

6. सही जोड़े मिलाओ : -

(क)	टूटी	(2)	1	जूते
(ख)	चमचमाते	( )	2	चप्पल
(ग)	अडियल	( )	3	जोकर
(घ)	अच्छा - खासा	( )	4	टट्टू
(ङ)	पुराना	( )	5	साहबजादे
(च)	बड़े	( )	6	अखबार
(छ)	कानपुरी	( )	7	चमड़ा

7. मुहावरों का अर्थ लिखो -

1 - सिर पीट लेना

2 - न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी

8. समझो और बताओ -

(1) जब मेहतरानी ने चप्पलें लाकर दी तो लेखक ने चप्पलों के बारे में क्या सोचा होगा ?

(2) लेखक ने क्या सोचकर चप्पलें नाली के पास रखी थी?

(3) नीम से उतरते समय जब कजोडीमल आ गए तो छदम्मीलाल ने मन में क्या सोचा होगा ?

★★★★

पाठ - 9

मोके की सूझ



सेठजी ने प्यारेलाल से कहा ,"अब मेरा अंत समय नजदीक आ गया है , तुम एक काम करना । अगर मैं न रहूँ तो तुम इस कारोबार और मेरे परिवार का काम काज देखते रहना । मेरी सम्पूर्ण सम्पति की देख भाल करना ।" चिन्ता न कीजिए सेठजी, अपने मन कोशांति दीजिये । ऐसा ही होगा , प्यारेलाल ने कहा था । इसी विश्वास पर कारोबार के सभी अधिकार सोंप रहा हूँ " मेरी दो पुत्रियाँ हैं - विद्या और संध्या । मेरी पत्नी है अहल्या और पुत्र है- सत्य प्रकाश । इनके सुख दुःख का ध्यान तुम्हे रखना है , सेठजी ने कहा ।

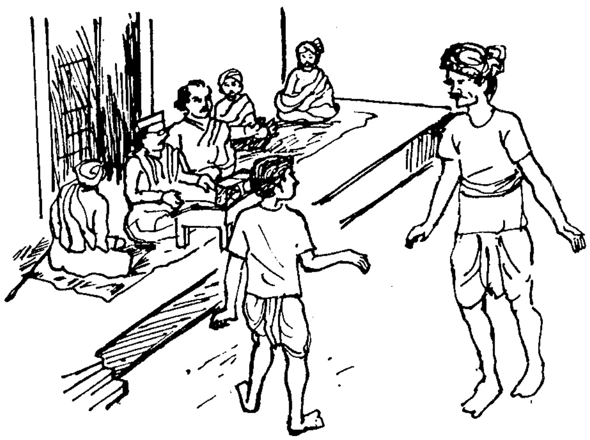
इनका ख्याल रखना मेरा प्रथम कर्तव्य है , प्यारेलाल ने कहा - ईश्वर चाहेगा तो आप शीध्र ही अच्छे हो जायेंगे । सत्य प्रकाश छोटा है , काम धन्धा नहीं चला सकता है । इसलिए जब इसकी उम्र अठारह वर्ष की हो

जाए , तब यह कारोबार व जायदाद उसे संभला देना। " इतना कह सेठजी मर गए ।

प्यारेलाल शुरू शुरू में सेठजी केपरिवार की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा । काम धन्धा चलता रहा, व्यापार में अच्छा लाभ हुआ । प्यारेलाल लाखों का व्यापार करने लगा । उसके मन में लोभ (लालच) पैदा हो गया । उसने रुख बदला। व्यापार मंद पड़ गया । इधर सेठजी के परिवार की दशा बिगड़ती चली गई । अहल्या को संध्या और विद्या के विवाह की चिन्ता सताने लगी । सत्य प्रकाश तब बड़ा हो गया था । प्यारेलाल का मन जायदाद के लोभ से बिगड़ गया । उसने धन हड़पना चाहा । सत्य प्रकाश ने कारोबार सौंपने की बात माँ से कही । माँ ने कहा , प्यारेलाल धन के लोभ में अंधा हो गया है । वह कारोबार तुम्हें नहीं सौंपेगा । तब मामला पंचायत में ले जाया गया । पंचायत ने दोनों के दस्तावेज मांगे, लेकिन प्यारेलाल ने उनको झूठा बताया । दूसरे दिन सत्य प्रकाश सरपंच के घर गया । वहाँ उनकी कुछ बातें हुई । सप्ताह भर बाद फिर पंचायत बैठी। प्यारेलाल ने फिर दस्तावेज झूठे बताए। सेठजी के बीमार होने तक कुछ भी नहीं बचा था । ऐसे में वे सत्य प्रकाश को कारोबार संभालने की बात कैसे कर सकते थे ?

सरपंच शांति से बोले -"अगर प्रमाण हो तो ? "

" कहाँ है प्रमाण ? बिना प्रमाण मैं कोई बात नहीं मानता । मैं तो चला।" प्यारेलाल ने कहा ।



ठहरो प्यारेलाल । इतना घमंड किसी को शोभा नहीं देता । पंचायत की बात मानो या न मानो पर थोड़ी देर ठहर कर, ये बातें सुनते जाओ । इतना कह कर सरपंच ने टेप रिकार्डर चालू कर दिया । वर्षों पहले की टेप की हुई सेठ जी की आवाज बैठक में गूंजने लगी । आवाज सुनकर प्यारेलाल फफक कर रो उठा । रोते रोते उसने सत्य प्रकाश को गले लगा लिया और कारोबार संभला दिया ।

प्रश्न - 1कठिन शब्द

हिन्दी	**वागड़ी**
सम्पूर्ण	पुरू
सम्पत्ति	पूंजी
परिस्थिति	आलत
घमण्ड	आन
कर्तव्य	फरज
स्वास्थ्य	सेत
प्रमाण	सबुत
पश्चात	वाँहै
प्रयत्न	कोसीस
मृत्यु	मौत
शीघ्र	जट
मित्र	दोस
अवश्य	जरूर
समाप्त	खतम

2. ऐसे शब्द बनाओ जिनमें संयुक्त अक्षर आएं

त्य	से	त्योहार
ढ्य		धनाढ्य
प्य		प्यार
व्य		व्यवहार
श्य		अवश्य
ध्य		ध्यान

न्त	अन्त
स्व	स्वास्थ्य
च्चा	सच्चा
ल्या	कौशल्या

3. व्याकरणि ज्ञान : -

एक वचन रूप से बहुवचन रूप बनाइये -

एकवचन	**बहुवचन**
पुत्री	पुत्रियाँ
पत्नी	______
शादी	______
कापी	______
योग्यता	योग्यताएँ
आवश्यकता	______
प्रथा	______
कथा	______
रात	रातें
पंचायत	
बात	

4. बताओ कि किस कथन के साथ कौनसा भाव ठीक जायेगा ।

(क.) चिंता न कीजिये, सेठजी	( )	1. हताश होने का भाव
(ख.) अब कुछ नहीं मित्र।	( )	2. विश्वास दिलाने का भाव
(ग.) आप व्यर्थ ही घबरा रहे हैं।	( )	3. बेईमानी आने का भाव

(घ) काश । यह सब व्यापार मेरा अपना होता ।	( )	4. धीरज बँधाने का भाव
(ङ) मैं तो चला ।	( )	5. पश्चाताप का भाव
(च) प्यारेलाल फफक कर रो उठा ।	( )	6. खीझ और नाराजगी का भाव

5. अनुच्छेद : -

"प्यारे लाल , सब प्रयत्न हो चुके, मैं हताश हो गया हूँ । देखो , मेरी मृत्यु हो जाए तो एक काम कर देना । मेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति की देख रेख भी करनी है" । विश्वास पर तो मैं तुम्हे अपने कारोबार के सभी अधिकार सौंप रहा हूँ । मेरी दो पुत्रियाँ विद्या और संध्या । पत्नी अहल्या और पुत्र सत्य प्रकाश । ज्योंही सत्य प्रकाश अठारह वर्ष का हो जाए , उसे यह कारोबार और जायदाद संभला देना ।

सेठजी की मृत्यु के पश्चात प्यारेलाल शुरू शुरू में सेठ के परिवार का ध्यान रखता रहा । प्यारेलाल लाखों का व्यापार करने लगा । जायदाद के मोह ने उसे अंधा कर दिया था । मन बदल गया ।

उपरोक्त गद्यांश पढ़कर निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

1. "मेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति की देख रेख भी करनी है। " यह वाक्य किसने कहा?
2. सेठजी ने अपना कारोबार किसको सौंप दिया ?
3. प्यारेलाल का मन कब बदला ?
4. सत्य प्रकाश को कब कारोबार सौंपनेकी बात कही गई थी ?

★★★★

पाठ - 10

पृथ्वी ने कहा



जिस प्रकार किसी किसी महापुरुष की यादगार में वस्तु या स्थानों के नाम रखे जाते हैं । उसी प्रकार मेरा नाम राजा पृथु की यादगार में पड़ा ।



हजारों वर्षों पहले नेता को राजा कहते थे । राजा चरित्रवान पराक्रमी और परिश्रमी होता था । यदि वह दुष्ट व अत्याचारी होता तो उसे राजा के पद से हटा दिया जाता था । वेण एक ऐसा ही दुष्ट राजा था । वेण को प्रजा ने मार कर पृथु को राजा बनाया । पृथु लोकप्रिय राजा था । उसने कल्याण कारी कार्य किये। प्रजा की कठिनाइयाँ दूर करना अपना कर्तव्य माना ।

मानव सभ्यता के बढ़ने के साथ- साथ मेरे रूप रंग में भी बदलाव आता गया है । आज जगह जगह पक्की सड़कें , रेल मार्ग, नगर, कस्बे, गाँव, वन उपवन , नहरें, बाँध , कल - कारखाने तथा दूर दूर तक फैले खेत बने हुए हैं । लोग समुद्रों की गहराइयों एवं आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँच गये हैं। किन्तु पहले केवल जंगल ही जंगल थे । जिनमें जंगली जानवर नदियाँ, घाटी, पर्वत आदि थे । लोगों के पास जमीन जायदाद व घर नहीं थे । एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे । कंद मूल, फल और जड़ी बुटियों से अपना पेट भरते थे । खेती करना उस समय नहीं आता था। बरसात में उगे पेड़ - पौधों से ही अपनी भोजन सामग्री तैयार करते थे। कुछ पेड़ -पौधों के बीज इकट्ठे कर लेते थे । जंगल में बीज न मिलने पर उन्हें कठिनाई आ जाती थी ।

पृथु ऐसे ही जमाने में राजा बने थे । उनके राज में लोंगों को सुख मिला , जनसंख्या बढ़ती चली गई । जंगल के कंद मूल, फल - फूल और भोजन इकट्ठा करना कठिन हो गया । कुटुम्ब - कबीले भोजन की तलाश में दूर - दूर तक फैल गये । अन्न के लिए संघर्ष में मरने कटने लगे ।

राजा पृथु को चिन्ता हुई । उन्होंने उपाय सोचा । अन्न जुटाना उनका प्राथमिक कर्तव्य हो गया । बरसात में पौधों पर दाने लगते थे , अधिक पौधे हों तो ढ़ेर से दाने मिल जाते थे । यह विचार कर अपने मेहनती साथियों के सहयोग से जंगल काटे, धरती साफ की । लकड़ी और पत्थरों

के ओजारों से खोदा । अन्न के दानों को धरती में बो दिया । कुछ समय बाद पौधे निकले और कई गुना नये बीज पैदा हुए । पृथु की योजना सफल हुई । लोगों ने खेती बाड़ी करना सीखा ।

मेरी समृद्धि बढ़ी और मैं उपजाऊ बन गई । मैं जो धरती थी अब पृथ्वी कहलाने लगी । राजा पृथु ने हल का आविष्कार किया । जिससे धरती जोतने में सुविधा हुई ।

प्रश्न - 1. कठिन शब्द

हिन्दी	वागडी
मार्ग	वाट
महापुरुष	मोटो आदमी
सम्मान	इजत
युग	जुग
चरित्रवान	असल लखण नो
परिश्रमी	मेणती
स्वभाव	सभा
लोकप्रिय	भावितो
कल्याणकारी	भलो करवा वाळो
सजी - संवरी	हबाई धबाई
रेल मार्ग	रेल लाइण /
समुद्र	मोटो दरियो
हिंसक	पापी
घुमक्कड़	फरेलो
कंद - मूल	जडी बूटी
निखरना	परखवु
स्वरूप	अकार

2. नाचे लिखे हर कथन को एक शब्द में लिखों -

(क) पराक्रम दिखाने वाला -

(ख) परिश्रम करनेवाला

(ग) अत्याचार करने वाला

(घ) जंगल में रहनेवाला

(ङ) एक स्थान पर नहीं रहने वाला -

4. **समझो और पहचानो कि ये नाम किस वर्ग के हैं ।**

1. व्यक्ति का नाम
2. जाति का नाम
3. भाव या विचार का नाम

वेण	( )
वन	( )
नहर	( )
कस्बा	( )
समुद्र	( )
राजा	( )
रुचि	( )
ऊँचाई	( )
स्वभाव	( )
पृथु	( )
उपवन	( )
गाँव	( )
नगर	( )
रास्ता	( )
व्यक्ति	( )
गहराई	( )
बुध्दि	( )

3. सोचो और उत्तर दो -

क. किन गुणों के कारण लोग राजा पृथु को प्यार करते थे ?

ख. आज धरती सजी सँवरी है - कैसे ?

ग. राजा पृथु के समय में लोग भोजन कैसे जुटाते थे ।

घ. राजा पृथु के लिए कौन कौन से विशेषण आए हैं

4. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों का जवाब लिखिए

राजा पृथु चरित्रवान, पराक्रमी और परिश्रमी था । राजा जब अत्याचरी होता तो जनता उसे हटा देती थी । वेण दुष्ट स्वभाव का राजा था जबकि पृथु पराक्रमी व लोकप्रिय राजा था । राजा पृथु ने ही लोगों को खेती करना सिखाया । उसने लोगों के कल्याण के लिए कई कार्य किये जैसे खेती करना सिखाया, सड़के निकलवाई, तालाब बनवाये, जंगल कटवाये इस तरह अच्छे कार्य किये ।

उस युग में लोग कंद मूल, फल फूल खा कर अपना पेट भरते थे।, उस समय लकड़ी पत्थरों के ओजारो से काम होता था ।

प्रशन -

(1) किसी भी राजा में कौन - कौन से गुण होने चाहिये ।

(2) लोगों को खेती करना किसने सिखाया?

(3) पुराने जमाने में हथियार किसके बनते थे ?

★★★★

पाठ -11

अब तक बहुत बह चुका पुरानी



उड़ता उड़ता कौआ आया
लिए चोंच में पूरी रोटी।
ताजी-ताजी, चुपड़ी-चुपड़ी
गोल-गोल थी मोटी-मोटी।

देखा लोमड़ ने उसको तब
बैठ चुका था जब डाली पर।
लोमड़ तब मीठी बोली से
बोला गरदन ऊँची कर -कर

मेरे राजा , कौए बेटे।
मैं तुझको पहचान गया हूँ।
आता -जाता रहा इधर मैं
कई वर्ष से, नहीं नया हूँ ।

मुझे पता है उस कौए के
तुम हो बेटे या हो नाती ।
जिस कौए ने मुझे सुनाई
यहाँ बैठकर मधुर प्रभाती ।

बैठा था वह इसी डाली पर
बैठ रहे हो अब तुम जिस पर ।
मेरे रहने पर गाया था
उसने अपना गाना स्वर भर ।

कौए भैया , तुम भी अपना
मीठा राग सुनाओ मुझको ।
अपने दादा - नाना जैसी
अपनी कला दिखाओ मुझको ।"



कौआ हँसा, चोंच की रोटी
पंजे में पकड़ी जब पहले।
बोला लोमड़ दादा सुन ले ।
"कान खोलकर दादा सुन ले ।

पुरखों का अनुभव पाया है
क्यों दुहराऊँ वह नादानी ।
अब न तुम्हारी दाल गलेगी
अब बहुत बह चुका पानी । "

पाठ - 11

अब तक बहुत बह चुका पानी

एक कौआ अपनी चोंच में एक ताजी रोटी को दबाये उड़ता हुआ एक पेड़ की डाल पर आकर बैठा । कौए की चोंच में रोटी देख कर एक लोमड़ पेड़ के नीचे आकर बैठा और कौए को सम्बोधित कर कहने लगा " मेरे राजा बेटे कौए । मैं तुझे पहचान गया हूँ । मैं कई वर्षों से इस ओर आता जाता रहा हूँ । मैं तेरे लिए नवा नहीं हूँ । इसी डाल पर बैठकर जिस कौए ने मुझे मीठी सी प्रभाती सुनाई थी, मुझे पता है।

उसके तुम बेटे या नाती हो । कौए भैया । तुम भी अपने दादा या नाना की भाँति गाना सुनाओ और अपनी कला दिखाओ । लोमड़ की बात सुनकर कौआ हँसा और उसने अपनी चोंच में दबी रोटी को अपने पंजे के नीचे दबाकर लोमड़ से कहा "कान खोलकर सुनो दादा। मैने अपने पूर्वजों का अनुभव पाया है। मैं अपने पूर्वजों की नादानी को नहीं दोहराऊँगा । तुम्हारी दाल अब नहीं गलेगी ।

मैं अपने पूर्वजों द्वारा की गई गलती नहीं दोहराऊँगा ।अब तक तुमने कौओं के गाने की झूठी प्रशंसा कर उनकी चोंच खुलवाकर, उनकी रोटी

प्राप्ति करने में सफलता प्राप्ति की है । अब तक बहुत पानी बह चुका है। इसलिए तुम्हारी चालाकी अब नहीं चलेगी ।

1. कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
कौआ	कागलो
वर्ष	वर
मधुर	मीटु
पहचानना	उलकवु
गाना	गीत
स्वर	राग
कला	कला
पंजा	पोग
हंसना	दात काड़वु / आहवु

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

1. - - - - - - - - - - - कौआ आया ।
2. - - - - - - - - - - - - - रहा इधर में।
3. - - - - - - - - - - - - - - दादा सुन ले।
4. अब न तुम्हारी - - - - - - - - - - ।

3. अन्तर समझो और बताओ : -

गरदन ऊँची कर	गरदन ऊँची कर - कर
गाना स्वर भर	गाना स्वर भर भर
आवाज तेज कर	आवाज तेज कर कर
चोंच - भर	चोंच भर - भर

4. सही अर्थ चुनो : -

(क)	कान खोल कर सुनना	( )	1.	बात नहीं बनना
(ख)	दाल नहीं गलना	( )	2.	चतुराई बताना
(ग)	अपनी कला दिखाना	( )	3.	ध्यान से सुनना

5. समझो और बताओ : -

1 – लोमड़ मीठी बोली में क्यों बोला ?

2 – कौआ कौनसी नादानी नहीं दोहराना चाहता था ।

3 – "अब तक बहुत बह चुका पानी " इस कथन का क्या आशय हैं ?

6. **निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**

कौआ हँसा, चोंच की रोटी
    पंजे में पकड़ी जब पहले ।
बोला लोमड़ दादा से यों
    "कान खोल कर दादा सुन ले ।

(1) हँस कर कौए ने क्या किया ?

(2) कौए ने लोमड़ से क्या कहा ?

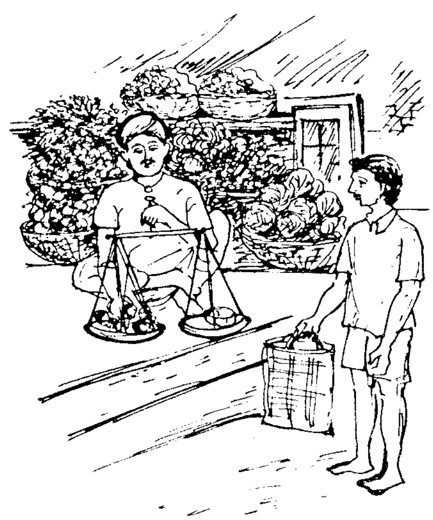
(3) "कान खोलकर दादा सुन ले इसका क्या अर्थ है ।

★★★★

पाठ -12

नई जिम्मेदारी

स्कूल की छुट्टी हुई । राधे बस्ता लेकर घर लौटा ही था कि माँ उतावली सी आई और बोली ,"तू आ गया, राधे । मैं कब से तेरी राह देख रही थी । "



"बेटा, अतिथि आए हैं । उनके लिए भोजन बनाना है, जरा लपक कर बाजार जा और सब्जी ले आ।"

रास्ते में वह सोचता जा रहा था कि मैं कभी बाजार सब्जी खरीदने तो गया नहीं । मा से भी तो नहीं पूछा कि क्या क्या लाना है। कितनी और कौनसी सब्जियाँ लानी हैं ? माँ ने दस रूपये का नोट दिया है । मैं पूरे दस रुपये की सब्जियाँ खरीद लाऊँगा ।

यह सोचते सोचते वह सब्जी मंडी में जा पहुँचा ।

वहाँ तरह -तरह की सब्जियों के टोकरे रखे थे । वह एक के बाद एक टोकरे को देखता - "कैसे दी ? क्या भाव लगाया ? "पूछता हुआ वह आगे बढ़ जाता । पर वह निर्णय नहीं कर पाया कि क्या खरीदे और क्या न खरीदे?

आगे बढ़ने पर बड़े आकार के कटहल को देखकर उसके मुहँ में पानी भर आया । उसने भाव -ताव किया और आधा किलो कटहल ही लिया।

आगे सब्जियाँ तो कई थी । - लम्बी - लम्बी भिंडियाँ , तुरई सहजने की फलियाँ , गोल - मटोल आलु , टिण्डे और कद्‌दू ।

उसने आधा किलो नरम नरम टिण्डे ले लिए ।

आगे बढ़ा तो पालक , सुआ , चन्दलोई और बथुआ दिखाई दिया । उसने आधा किलो बथुआ भी तुलवा लिया ।

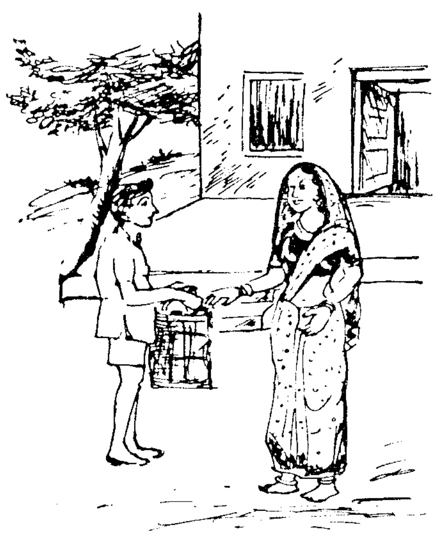
वह फिर सोचने लगा - क्या लूँ और क्या न लूँ । उसे अच्छा पका हुआ कद्‌दू दिखाई दिया । माँ कद्‌दू का रायता भी अच्छा बनाती हैं । उसने एक किलो कद्‌दू भी खरीद लिया ।

चलते चलते उसने हरी मिर्च , ताजा अदरक और पत्तीदार हरा धनियाँ भी खरीद लिया ।

अब भी उसके पास तीन रुपये साठ पैसे बच रहे थे ।

आलुओं पर उसकी नजर पड़ी । बडे - बडे आलू छाँटकर उसने दो किलों आलू भी तुलवा लिए ।

सब्जी लेकर राधे घर पहुँचा । सब्जियों से भरे थेले को देखकर माँ की आँखे फटी की फटी रह गई। "राधे , क्या तू सारी सब्जी - मंडी खरीद लाया।



माँ नें सब्जियाँ देखी तो उसकी तबीयत खिल उठी । राधे अच्छी ताजी सब्जियाँ लाया था । राधे को कुछ समझाया नहीं था । फिर भी वह सौदा ठीक कर लाया ।

"सब्जियाँ तो तू ताजी , अच्छी और सस्ती लाया है ।आगे से सब्जी तू ही लाया करना ।"

अब राधे समझ गया कि उस पर नई जिम्मेदारी आ गई है ।

1 उच्चारण सीखो : -

शब्द	**वर्ण**
जिम्मेदारी	जिम् / मे / दारी
चक्कर	चक् / कर
सब्जी	सब् / जी
कद्दू	कद् / दू
चन्दलोई	चन् / द / लोई
स्वादिष्ट	स्वा / दिष / ट
बस्ता	बस् / ता
सस्ता	सस् / ता

2 मिलते - जुलते अर्थ वाले शब्द : -

हिन्दी	**वागडी**
उतावली	उतावली
सब्जी	साक
पूछा	पुसयु
लाऊँगा	लावुँगा
भाई	भाई

3 हिन्दी शब्द जिनका वागड़ी में समान शब्द नहीं है शब्दों का अर्थ (वाक्य द्वारा अर्थ स्पष्ट करना)

हिन्दी में	**वागडी में**
खरीदना	सामन वेसातु लेवु ।
सब्जी मण्डी	साग वेसवा नु बजार
चन्दलोई	पाजी नु नाम है ।
स्वादिष्ट	हवादे लागे एवु ।
कटहल	एक रुकड़ा नु नाम

4 विशेषण शब्दों के नीचे रेखा खींचों -

1 - जैसे दस रुपये का नोट

2 - तरह तरह की सब्जियाँ

3 - नरम नरम लम्बी लम्बी भिंडियाँ

4 - बथुए का साग

5 - हरी मिर्च

6 - नरम नरम आधा किलो टिण्डे

7 - आधा किलो बथुआ

8 - ताजा अदरक , बड़े बड़े आलू

9 - एक किलो कद्दू , पत्तिदार धनियाँ

10 - तीन रूपये , लाल टमाटर , अच्छी ताजी

5 सही जोड़ी मिलाओं

विशेषण			विशेष्य
(क)	नरम - नरम	( )	1 - अदरक
(ख)	हरी	( )	2 - टमाटर
(ग)	लम्बी - लम्बी	( )	3 - मिर्च
(घ)	लाल	( )	4 - फलियाँ
(ङ)	गोल - मटोल	( )	5 - पालक
(च)	पत्तीदार	( )	6 - टिण्डे
(छ)	ताजा	( )	7 - भिण्डियाँ

6 बहुवचन बनाओं

सब्जी	सब्जियाँ
फली	______
मूली	______
भिण्डी	______
तुरई	______
मिर्ची	______

7 समझो और बताओं

(1) राधे पर कौनसी नई जिम्मेदारी आ पड़ी ?

(2) "थैले को देखकर मा की आँखे फटी की फटी रह गई "ऐसा क्यों हुआ ?

(3) "सब्जियाँ तो तू ताजी , अत्थी और सस्ती लाया है । "इस वाक्य में "सब्जियाँ "शब्द के लिए कौन से विशेषण शब्द आए हैं ?

8 निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर लिखिये -

सब्जी लेकर राधे घर पहुँचा । सब्जियों से भरे थैले को देख कर माँ की आँखे फटी की फटी रह गई । " राधे क्या तू सारी सब्जी मण्डी खरीद लाया? नहीं माँ तूनेअतिथियों के लिए सब्जी मंगवाई थी , पर तूने यह तो बताया नहीं कि क्या क्या सब्जी, कितनी लानी है । तूने दस रुपये का नोट दिया था। मैंसमझा पूरेदस रुपयोंकी सब्जी लानी है।"

प्र.1 सब्जी के थैले को देख कर राधे की माँ की आँखे फटी की फटी क्यों रह गई ?

प्र.2 राधे की माँ ने किसके लिए सब्जी मंगवाई थी ?

प्र.3 माँ ने राधे को सब्जी खरीदने के लिए कितने रुपये दिये थे?

★★★★

पाठ -13

कलाकार का सम्मान

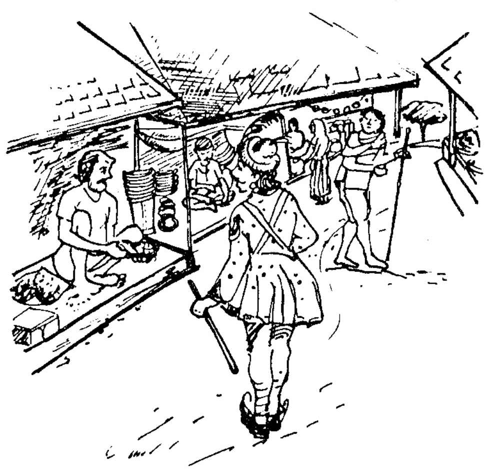
सुदर्शन बहुत जाना माना मुर्तिकार था ।

सप्ताह में एक बार गाँव में हाट लगती थी । इसमें वह अपनी मुर्तियाँ लेकर जाता था । बेचकर शाम को घर आ जाता था । प्रति सप्ताह उसका यही नियम था । उसकी बहुत बड़ाई होती थी । मेले में जितनी मुर्तियाँ ले जाता वे बिक जाती थी न ले जा पाने वाले निराश लौट जाते थे । यह घर घर जाकर मूर्तियाँ नहीं बेचता था । उसका नियम था , चाहे गरीब हो या अमीर , मूर्तियाँ खरीदनी हो , वह हाट में आए और ले जाए ।

सुदर्शन सभी तरह की मूर्तियाँ बनाता था । देवी देवताओं जानवरों आदि की । इन मूर्तियों का चेहरा मोहरा और बनावट देखते ही बनती थी। उसने यह कला अपने बेटों को सिखाने की कोशिश की किन्तु किसी ने नहीं सीखी । बेटों का यह रूख देख उसे दुःख हुआ ।

"सकल पदारथ है, जग माही करमहीन नर पावत नाहीं " यह सोचकर सुदर्शन अपने मन को समझाता ।

इस तरह सुदर्शन मूर्तियाँ बेचकर अपना गुजारा चलाता था । उसने पूँजी इकट्ठा कर ली थी , लेकिन मन में सोचता , मेरी कला मेरे साथ ही चली जाएगी । जब कभी वह सोचता , उदास हो जाता था ।



एक दिन हाट में राजा का दरबारी मूर्तियाँ खरीदने आया । उसने देखा कि मूर्तिकार के पास एक ही मूर्ति शेष है और एक व्यक्ति से सौदा हो चुका है । यह देखकर दरबारी ने कहा ,"कल मूर्तियाँ लेकर राज दरबार में आना।"

सुदर्शन ने कहा माफ करें श्रीमान्। यह मेरे नियम के विरुद्ध है । दरबारी बड बड़ाता हुआ चला गया। दरबारी ने बढ़ा चढ़ाकर राजा से शिकायत की । राजा दरबारी की आदत से परिचित था। उसने विचार किया कि दरबारी ने मूर्तिकार के मन को ठेस लगने वाली बात कही होगी



इसलिए मूर्तिकार ने हाट में आकर मूर्तियाँ बेचना बंद कर दिया । लोग मूर्तियों के लिए तरसने लगे। तब राजा स्वयं मूर्तिकार के घर गया और उसका सम्मान किया । धन्य है वह कलाकार और वह राजा भी ।

प्र -1 उच्चारण एवं लिखने का अभ्यास

सुदर्शन	सु / दर् / शन
मूर्तिकार	मूर् / ति / कार
संध्या	सन् / ध्या
प्रशंसा	प्र / शन् / सा
सुन्दर	सुन् / दर
संतोष	सन् / तोष
कृष्ण	कृष् / ण
सरस्वती	सरस् / वती
नक्शा	नक् / शा
इकट्ठी	इक / ट्ठी
सम्भव	सम् / भव
पदार्थ	पदा / र्थ
विरुद्ध	वि/रुद् / ध

प्र -2 कठिन शब्दों के वागड़ी रूपान्तर जानें -

हिन्दी	**वागड़ी**
मूर्तियाँ	मुरतीए
संध्या	आतमयु
नियम	निम
प्रशंसा	मुटाई / बड़ाई
निराशा	खिजावु
मूर्तिकार	मुरती वणावणा वाळो

हिन्दी	वागड़ी
संतोष	सान्ती
कोशिश	कोसिस
सकल	असल
निराशा	आसा वगर
करमहीन	वगर किस्मत नो
शेष	वसीलु
क्षमा	माप
कला	कला
दरबार	दरबार
परिचित	ओळखीतु

प्र -3 व्याकरणिक तत्व

" र " के क्या - क्या रूप हैं , उन्हें जानो

1 - बार, वार , तरह -तरह , रतन , रमेश , राम , रात , राख, बरात , अंगारा

2 - पर्व , सर्व , धैर्य , सर्प , दर्द , नर्म ।

3 - प्रति , प्रशंसा , चक्र , फिक्र , प्रकाश मित्र , चित्र , पत्र , छत्र , चैत्र , इत्र ।

4 - राष्ट्र , ड्रक ,

रप्र .4 - विलोम शब्द बनाइये

शब्द	विलोम
दिन	रात
राजा	
सुबह	
अमीर	
सम्मान	

प्र.5 - संयुक्त क्रियाएं सीखिए जैसे -

बिक	जाना
चला	जाना
आ	पाना
जा	पाना

प्रयोग -

(1) माल बिक गया ।

(2) राम चला गया ।

(3) वहाँ चले जाना ।

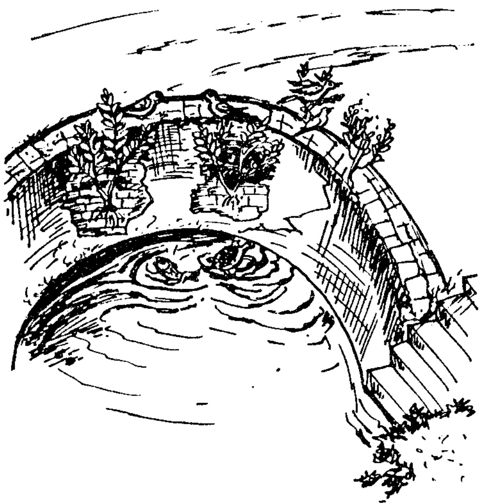
(4) मेरा आठ बजे जा - पाना मुश्किल है ।

(5) जल्दी आ पाना ।

★★★★

पाठ - 14

दुष्टता का अन्त



सप्ताह भर की खोज के बाद कबूतर को एक पुरानी बावड़ी में अपनी इच्छानुसार जगह मिल गयी। यह उसके परिश्रम का फल था । बावड़ी की दीवारें टूटी थी उनमें बोने पेड़ थे । सुरक्षा के लिए उसे ऐसा ही स्थान चाहिये था ।

कबूतरी को भी वह स्थान दिखाया गया । जो सभी और से सुरक्षित था । काश । ऐसा स्थान पहले खोज लिया होता । कहते कहते कबूतरी की आँखें भर आई । कबूतर को भी कुछ अफसोस हुआ।

मगर दिल में धीरज रखते हुए कबूतरी को ढाढस बंधाई । अब पछताए होत क्या , जब चिड़िया चुग गई खेत । हिम्मत मत हारो धीरज धरो । कभी न कभी दुष्ट का अन्त होगा ही ।

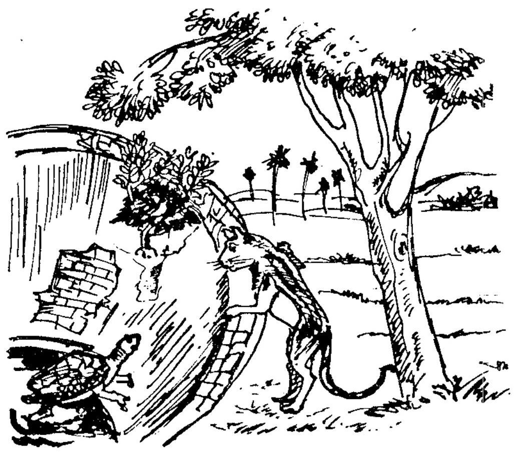
"गुटरगू - गुटरगू 'की आवाज सुनकर पड़ोसी उन्हें देखने आये , कबूतर व कबूतरी ने आने वालों की आवभगत की । बाद में सुख दुःख की बातें की । संध्या को अपने घरों को लौट गये ।

कबूतरी को यह सब अच्छा लगा लेकिन कुछ दुःख भी हुआ। क्योंकि यहाँ अपनी जाति के लोग नहीं है । हमेशा एक से दिन नहीं होते हैं । हमारी मुसीबत में काम आने और हमारा भला चाहने वाले मित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिये । जाति के लोग होते तो अपना आनन्द कुछ और ही होता? क्या बावली हो गई हो तुम । कबूतर ने कहा कि पहले जाति बिरादरी वाले थे तो उन्होंने क्या सहायता की । टुकर टुकर सब देखते रहे । किसी ने कोई गुटर - गूँ भी नहीं किया । देखते देखते निगौड़ी बच्चों कोखा गई ।

सभी कुटुम्बी देखते रहे । किसी ने मदद नहीं कि लेकिन कबूतर सभी की मदद करता तथा मिलकर रहता था । थोडे समय बाद कबूतरी ने अण्डे दिये । अण्डों से बच्चे निकले । हरियल तोता बच्चों को दुलारता बया उन्हें झुलाती । कछुआ काका बच्चों का पूरा ध्यान रखते वे उनकी आँखों के तारे थे ।

एक दिन दोपहर के समय दुष्टा आ ही गई । कछुआ काका घबरा गए। काका बावडी से बाहर आ गये । बिल्ली से बोले कैसे आना

हुआ ? वैसे ही घूमती हुई आ गई । आपको तैरते हुए देख कर रुक गई । नहीं मौसी बात कुछ और है । मेरे से क्यों छिपाती हो ।



बिल्ली ने कबूतर के बच्चों की ओर इशारा करते हुए जम्हाई ली। कछुआ मुस्कुराया और हँस पड़ा । मौसी आप तो दयालु हो । ये बच्चे सबके प्यारे हैं। आप तो अच्छी अच्छी चीजें खाती हो । इन्हें छोड़ दो मौसी । वह तनक कर बोली मैं भूखी हूँ । मैं कुछ नहीं जानती । कछुआ बोला मौसी मान जाओ । इन बच्चों को छोड़ दो । यही प्रार्थना है । बिल्ली को दया आ गई । उसने कहा अच्छा मैं पास वाले घर जाकर दूध पीलूँगी । बच्चों को मार कर क्या मिलेगा ।

प्र - 1 उच्चारण अभ्यास

दुष्टता	दुष्ट / ता
सप्ताह	सप् / ताह
अन्ततः	अन्त / तः

1. कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
परिश्रम	मेणत
बोना पेड़	नानु रुखड़ु
तत्काल	तुरत
ढाँढस	धीरज
आवभगत	खातरी
हिम्मत	इम्मत
परिचय	ओलखण
न्योता	नोतरा
सगा - सम्बन्धी	हगाँ वाळाँ
हेल मेल	मली जुली नै /अली मली नै
छोटे -छोटे	नानँ - नानँ
पड़ौसी	पाड़ोही
त्योहार	तेवार / उहो
जड़ी - बूटी	जड़ी - बूटी
मौसी	माही
कछुआ	कासबु /कापसु

हिन्दी	वागड़ी
काका	काको
चाची	काकी
चिड़िया	सकली
निहोड़ी	नकटी / नींस

2. मुहावरे अर्थ

(अ)	**अब पछताए होत क्या , जब चिड़िया चुग गई खेत ।**	**नुकसान होने के बाद पछताने से कोई फायदा नहीं ।**
(1)	आंखे भर आना ।	दुःख प्रकट होना ।
(2)	बेचैन हो जाना ।	परेशान हो जाना , फिक्र करना ।
(3)	धीरज धरना ।	धैर्य रखना ।
(4)	सांप सूंघना ।	चुप्पी साध लेना ।

3. जोड़े बनाइये : -

झँखाड़ , बूँटी , सम्बंधी , मेढ़ी , मोटे, दुःख -

इनमें पहला शब्द दिया है मिलता -जुलता शब्द ढूँढ कर दिए गए शब्दों की सहायता से आप भी जोड़े बनाइये जैसे - आव -भगत

जड़ी ---

झाँड़ ---

टेढ़ी ---

सगा ---

सुख ---

छोटे ---

4. नमूने के अनुसार नये शब्द बनाओ : -

जैसे	सुरक्षा से	सुरक्षित
	इच्छा	----------
	परिचय	----------
	लिख	----------
	पठ	----------
	सम्बन्ध	----------

5. समझो और बताओ : -

क अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।" यह कहावत कब कही जाती है ।

ख कबुतरी को कौनसी घटना याद आई जिससे उसकी आँखे भर आई ।

ग हमें अपना भला चाहने वाले मित्रों को बढाना चाहिये । कबूतरी ने क्या सोच कर यह बात कही ?

घ कबूतर का स्वभाव किस तरह का था ? बिल्ली ने कबूतर के बच्चों की तरफ इशारा क्यों किया ? कछुए ने बिल्ली का मन कैसे बदला ?

7. नीचे दिये हुए अनुच्छेद को पढ़कर निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : -

अन्तत ः उसका परिश्रम और दौड़ भाग रंग लाई । कबूतर को अपना घोंसला बनाने का इच्छित स्थान , पुरानी बावड़ी में मिल

ही गया । काश ऐसा स्थान पहले खोज पाते ।" कहते - कहते कबूतरी की आँखे भर आई । कबूतर ने समझाया - " अब पछताए होत क्या , जब चिड़िया चुग गई खेत । यह कहावत तो तुमने सुनी ही है । कभी न कभी तो बिल्ली की दुष्टता का अन्त होगा ही । "

(क) घोंसला बनाने के लिए कबूतर को स्थान कहाँ पर मिला ।

(ख) "काश । ऐसा स्थान पहले खोज पाते ।"यह वाक्य किसने और किसको कहा ।

(ग) किसकी आँखों में आँसू भर आये । निम्न चार सम्भावित उत्तर दिये गये हैं जो सही उत्तर हो उसे कोष्टक में लिखो

(अ) कबूतर (स) कछुआ

(ब) बिल्ली (द) कबूतरी

( )

★★★★

पाठ - 15

(समय सुबह का)

जागो , आया समय सुबह का ।
बाग - बगीचा आंगन महका ।।

नहीं अंधेरा नहीं धुंधलका ,
आई सुबह लिए उजयाली ।
आसमान रंग गया सुनहला ,
फैल गई पूरब में लाली ।।



ऊँची शाखाओं को छूती ,
किरणें आ उतरी हैं भू पर ।
ओस कणों को चुगा उन्होंने ,
सभी जगह से एक - एक कर ।।

फीका पड़ा चांद का मुखड़ा , नहीं
चाँदनी रही यहाँ अब । सारी
रात चमकने वाले , तारे जाने गए
कहाँ सब ।।

मुर्गों ने उठ बांग लगाई ,
चहक उठी चिड़िया मन भाई ।
कुकडू - कूँ , चीं -चीं आवाजें ,
गूँज उठी कानों में भाई ।।

बाग - बगीचों अमराई में ,
कूक उठी है कोयल काली ।
फूलों से भर अपनी झोली ,
फूँली नहीं समाई डाली ।।

छोड़ बिछौना उठ बैठो सब ,
आलस छोड़ो , आंखे खोलो ।

दाँत मलो , मुँह - हाथ - पांव
धो, सभी साफ - सुथरे अब हो
लो । गुन-गुन कर भँवरे मंडराए,
कलियाँ जागी ले अंगड़ाई ।।
रंग - बिरंगे पंखों वाली ,
कई तितलियाँ उड़ - उड़ आई ।।



हुआ उजाला हलका - हलका ।
जागो , आया समय सुबह का ।।

पाठ - 15

समय सुबह का

जागो , सुबह का समय आ गया है । बाग - बगीचे , आंगन फूलों की सुगन्ध से भर उठे हैं । अब न तो अंधेरा है और न ही धुँघलकहै। उजियाला हो गया है । पूरब में सूरज की लालिमा फैल गई है ,और आसमान का रंग सुनहला हो गया है ।

पेड़ों की ऊँची शाखाओं को छूती हुई किरणें धरती पर उतर आई हैं । किरणों ने ओस कणों को चुग लिया है । चाँद का मुखडा फीका पड़ गया है । चाँदनी अब नहीं रही । रात के तारे छिप गये । कुकड़ू कूँ कर मुर्गे ने बांग लगाई । चिड़ियाँ थों चहकीं । उनका चहकना मन को भाया । मुर्गे और चिड़ियों की आवाजें मन को अच्छी लगीं । आम के बागों में कोयल कूक उठी । डालियाँ फूलों से लदीं और फूली नहीं समाई ।

बिस्तर छोड़ो , उठो । आलस को छोड़ो , आंखें खोलो । दंत मंजन करो , हाथ -पाँव धोकर साफ सुथरे हो जाओ । उजाला हो गया है , गुन - गुन करते भँवरे मंडराए कलियाँ उड़ती - उड़ती उन पर आईं । अब सुबह का समय आ गया है ।

1 कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
अंघेरा	अंदारू
सुनहला	हुनेरु
धुँधलका	बगबगु
तितली	फुदी
बिछौना	वाथरणु
चाँदनी	सदणी
अँगड़ाई	आमलो
हलका	अलकु / फौरु
मंडराना	भमणु

2 सज्ञा शब्दों के वागड़ी रूप

हिन्दी	वागड़ी
आँगन	आँगणु
आकाश	अंगास
मुर्गा	कुकड़ो
बगीचा	वगीसो
कोयल	कोएल

3 निम्न पद्यांश को पढ़ो और समझो -

(1) आसमान रंग गया सुनहला
फैल गई पूरब में लाली ।

(2) फूलों से भर अपनी झोली ,
फूली नहीं समाई डाली ।

(3) छोड़ो बिछौना उठ बैठो सब
आलस छोड़ो आँखें खोलो ।

(4) गुन -गुन कर भँवरे मंडराए
कलियाँ जागी ले अंगड़ाई ।

उपरोक्त पद्यांश को पढ़ कर निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए : -

(1) लाली कौनसी दिशा में फैल गयी ?
(2) डाली फूली क्यों नहीं समाई ?
(3) गुन -गुन कर कौन मंडराते हैं ?

4 पक्ति पूरी करो : -

बाग बगीचों अमराई में, ... उठी है कोयल काली ।
दांत मलो , मुहँ - हाथ - पावँ थो सभी . . . . अब हो लो।

5 समझो और बताओ : -

(क) प्रातःकाल कौन कौन से पक्षियों की आवाजें सुनाई पड़ती है ?

(ख) आंखे खोलने के बाद क्या -क्या काम करने की बात कही गई है ।

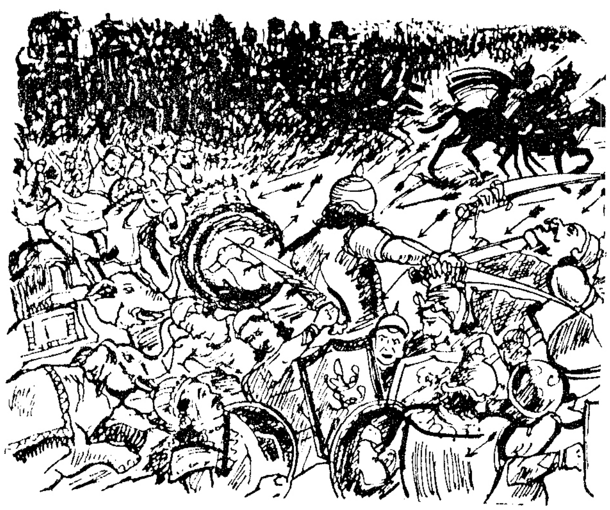
(ग) "फीका पड़ा चाँद का मुखड़ा । " चाँद का मुखड़ा फीका कब पड़ता है ?

(घ) कोयल , मोर एवं मुर्गे की बोली बोल कर सुनाइये ।

★★★★

पाठ -16

वीर बालक अभिमन्यु



लगभग पाँच हजार साल पुरानी बात है । कौरव सौ भाई थे और पाँडव पाँच भाई थे । कौरवों ने पाण्डवों को राज्य से वंचित कर दिया था कौरवों ने उनकी हत्या का भी प्रयास किया था । अन्त में युद्ध की घोषणा हो गई , वह युद्ध था , भाई -भाई के विरुद्ध । काका -भतीजे , मामा -भाँजे , पोते - दादा - नाना के विरुद्ध । सभी मैदान में डटे थे ।

पाण्डवों में अर्जुन जोरदार तीरन्दाज था । कौरवों का ज्यादा नुकसान हो रहा था । कौरवों ने यह योजना बनाई , जिसमें अर्जुन को अकेला लडने जाना पड़ा । दूसरे दिन कौरवों के सेनापति द्रोणाचार्य ने अपनी अलग ढंग की दूसरी योजना बनाई । जिसमें सात घेरे बनाए गए । जिसमें घुसने की और निकलने की विद्या केवल अर्जुन को ही आती थी । अर्जुन दूर गया हुआ था । अब पाण्डव क्या करते ? उन्हें समझ में नहीं आ रहा था । सात घेरों को तोड़ने के लिए किसे भेजें ।

कौरव जान गये कि आज पाण्डवों में से एक भी जीवित नहीं बचेगा।

अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने युधिष्ठिर से कहा , आप चिन्ता न करें । चक्र व्यूह भेदने की विद्या मुझे भी आती है लेकिन बाहर आने की विद्या मुझे नहीं आती । भीम ने कहा " बस हम भीतर जाकर प्रलय मचा देंग। लेकिन अभिमन्यु को हम खतरे में डालें, यह हमें शोभा नहीं देता , घर्मराज ने कहा । "

अभिमन्यु ने कहा मैं बालक हूँ तो क्या हुआ , समय पर बालक समाज के लिए बलिदान कर देते हैं । यदि यह विद्या इस समय काम नहीं आयी तो मेरा जीना व्यर्थ है । आप मुझे आशीर्वाद दें, उस दिन अभिमन्यु सेनापति बना और चक्रव्यूह भेदने गया । उसके पीछे सभी पाण्डव भी गये । तीसरे घेरे में सब उलझ कर रह गये । अकेला अभिमन्यु बीच में चला गया ।



पितामह भीष्म आश्चर्य चकित थे। मगर दूसरे कौरव भयभीत थे । अगर यह बालक चक्र तोड़ कर निकल गया तो उनकी वीरता को कलंक लग जायेगा । उन्होंने प्रण किया कि चाहे जैसे भी हो , वे अभिमन्यु को चक्र व्यूह से बाहर नहीं जाने देंगे ।

सभी ने उसे घेर लिया । उस समय में युद्ध का नियम होता था कि जिसके पास हथियार न हो , उस पर वार नहीं किया जाता था । एक वीर से एक शत्रु ही युद्ध करता था । मगर उस पर सात - 2 वीर टूट पड़े । अन्त में वह वीर गति को प्राप्त हो गया । वह घटना कौरवों के नाम पर भारी कलंक बनी और अभिमन्यु का नाम अमर हो गया ।

1 कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
पुराना	जूनु
सैकड़ों	कईक
अधिकार	कब्जो
प्रयत्न	कोसिस
युद्ध	लड़ाए
विरुद्ध	बदले
बेजोड़	काठोबर / मजबूत
योजना	तरीको
चक्रव्यूह	घेरो
चिन्तित	सिन्ता
भीतर	माए
शोभा	असल
निरर्थक	इमुज
आशीर्वाद	शबाशी
सेनापति	फौज नो मुरो आदमी
आक्रमण	वार करवु
कलंक	साप

2 विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखिये -

	अर्थ	विलोम
जैसे -	ज्यादा	कम
	आना	________
	मरना	________
	कायर	________
	ऊपर	________
	अन्दर	________
	अन्त	________
	दूर	________
	सुबह	________
	प्राचीन	________

3 अभ्यास प्रश्न

(1) कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध होने का प्रमुख कारण क्या था ?

(2) चक्रव्यूह को भेदने की कला के बारे में अभिमन्यु ने क्या कहा ?

(3) चक्रव्यूह की रचना के दिन पांडव क्यों परेशान हो गये ?

(4) "बालक अभिमन्यु को ही खतरे में डालें " यह हमे शोभा नही देता " यह बात धर्मराज ने क्या सोचकर कही ?

(5) चक्र व्यूह में महारथियों ने अभिमन्यु को कैसे मारा ?

(6) चक्रव्यूह की रचना किसने की थी ?

4 नीचे लिखे गधांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

कौरवों ने पाण्डव को राज्य से वंचित कर दिया था । पाण्डवों ने अपने राज्य पर अधिकार करने के लिए उनसे लड़ाई की थी । पाणडवों में अर्जुन बेजोड़ तीरन्दाज था । अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र था । उसने द्रोणाचार्य द्वारा बनाए चक्र व्यूह को तोड़ा, वह चक्र व्यूह को भेदने मेंसफल हुआ और अपना बलिदान कर दिया ।

1 - पांडवों ने कौरवों से लड़ाई क्यों लड़ी थी ?

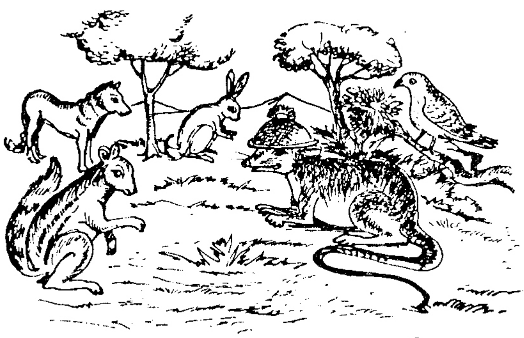
2 - पाण्डवों में बेजोड़ तीरन्दाज कौन था ?

3 - अभिमन्यु कैसे मारा गया ?

★★★★

पाठ -17

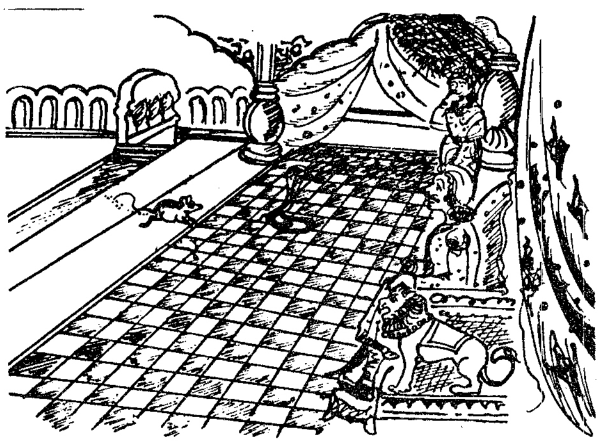
कागा मूषक टोपी ले ली



एक चूहे को कहीं से मोती मिल गया । वह उसे लेकर दर्जी के पास गया और मोती को टोपी में जड़वा दिया । वह उसे पहन लेता और अकड़ - अकड़ कर चलता था।

एक दिन चूहा टोपी सिर पर रखे अकड़ता हुआ जा रहा था । उधर से कौए ने झपट्टा मारा और टोपी लेकर नीम की डाली पर बैठ गया। चूहे को गुस्सा आया और नीम के पास गया और कहा नीम कौए को उड़ा । नीम ने कौए को नहीं उड़ाया । तो वह सुथार के पास नीम कटवाने गया । सुथार





ने नीम नहीं काटा तो वह सुथार को दण्ड दिलवाने राजा के पास गया । राजा ने दण्ड नहीं दिया तो वह रानी के पास राजा से रूठने को कहने गया । रानी राजा से रूठी नहीं तो वह सांप के पास रानी को कटवाने के लिए गया । लेकिन सांप ने रानी को नहीं काटा तो वह चींटी के पास गया और अपने साथ चलकर सांप को खाने के लिए कहा । चींटी तैयार हो गई और अपनी फौज लेकर चूहे के साथ चल दी । उसके बाद सभी अपना - अपना काम करने को तैयार हो गए ।

अन्त में कौए ने चूहे को टोपी दे दी ।

1. **नीचे लिखे वाक्य पर घ्यान दो --**

नीम ने कौए को नहीं उड़ाया तो वह सुथार के पास नीम कटवाने आया । ऊपर के नमुने के अनुसार "तो" लगाकर वाक्य जोड़ कर लिखो।

क. मोहन नहीं आया ख. मैं उसे दंड दूंगा

1. ______________________________

क. अगर बच्चा यह काम कर गया ख. वह बहादुर कहलाएगा

2. ______________________________

क. मैं ने गाडी पकड ली ख. मैं निश्चिंत हुआ

3. ______________________________

2. **समझो और बताओ -**

अन्त में चूहे की सहायता किसने की ?

बताओ कौन किससे डरा ?

सांप ________

रानी ________

राजा ________

सुथार ________

कौआ ________

चूहा ________

चींटीं ________

3. "आ" से अन्त होने वाले पुल्लिंग एकवचन वाले नामों को अनेक वाचक कैसे बनाते हैं - उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

एक	**अनेक (1)**	**अनेक (2)**
एक चूहा था	कई चूहे थे।	चूहों के बिल थे।
कौआ	कौए	कौओं के घोंसलें थे ।
बच्चा	___________	___________
गधा	___________	___________
बाजा	___________	___________
मौजा	___________	___________
समोसा	___________	___________

ऐसे ही "आ"से अन्त होने वाले स्त्रीलिंग एक वचन नामों को अनेक वाक्य में बदलना हो तो -

एक	अनेक (1)	अनेक (2)
सजा	सजाएं	सजाओं से बचो
चिड़िया	चिड़ियाँ	चिड़ियों के पिंजरे
क्रिया	क्रियाएँ	क्रियाओं -- पर जोर
ध्वजा	_____	________ पर रंग
गुफा	_____	________ में अंधेरा
आशा	_____	-- आशा -- का -- संसार

4. **अब इन मिले -जुले "आ" से अन्त होने वाले एक वचन नामों के अनेकवाची शब्द तुम स्वयं बनाओ -**

(1)	बस्ता	(2)	रास्ता	(3)	करेला	(4)	रस्सा
(5)	कुरता	(6)	चिन्ता	(7)	कमरा	(8)	माता
(9)	माला	(10)	पाजामा	(11)	केला	(12)	थैला

5. **चुहा कौए से टोपी लेने मदद मांगने इन लोगों के पास गया । तुम सिलसिलेवार , जमा कर बताओ कि वह पहले किसके पास गया , बाद में किसके पास -**

गलत क्रम	**सही क्रम**
राजा	- - - -
नीम	- - - -
सुथार	- - - -
रानी	- - - -
सांप	- - - -
चींटीं	- - - -

6. **दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।**

ऐसा कहकर नीम ने अपनी डाली को जोरों से हिलाया , कौआ डर के मारे काँव -काँव करने लगा और उसकी चोंच से टोपी गिर गई ।

मूषक राजा ने टोपी ले ली । सिर पर धारण की और नाचने लगा ।

क. अपनी डालियों को जोरों से किसने हिलाया ?

ख. डर के मारे काँव -काँव कौन करने लगा ?

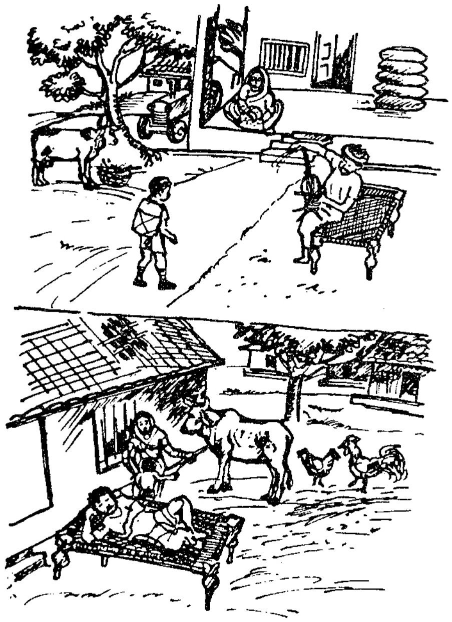
ग. किसकी चोंच से टोपी गिर गई ?

घ. मूषक राजा (चूहा)टोपी मिलने के बाद क्या करने लगा?

★★★★

पाठ - 18

आप काज महाकाज



जय राम और देव राम दो भाई एक ही घर में रहते थे । जयराम छोटा भाई था और देवराम बड़ा भाई । एक दिन जयराम ने देवराम को घर का बँटवारा करने को कहा । देवराम ने कारण पूछा । जयराम ने कहा कि भाभी सारे दिन ताने देती रहती है । देवराम ने अपनी पत्नी की ओर देखा । पत्नी ने कहा कि एक जना आराम करे और एक काम करे, यह सहन नहीं होता । अच्छा है, दोनों भाई अलग हो जाएँ ।

दोनों ने पंचों को बुलाकर खेत व घर के बर्तन बासन व आंगन का बँटवारा किया । बड़ा भाई देवराम सदा मेहनती था । वह अपने साथियों के साथ मिल जुलकर खेत की नालियाँ ठीक करता , खेत से कंकड़ निकालता, खेत जोतता । उसके घर में अनाज दूध व घी की कोई कमी नहीं थी । वह धनवान बनता गया ।

छोटा भाई बचपन से आलसी था। वह घर पर सोया रहता और मजदूरों से खेत गोड़ने, नालियाँ ठीक करने आदि को कहता । घर में अनाज भर आने लगा । उसकी दशा बिगड़ती गयी ।उसकी पत्नी झगड़ा करती थी । वह कहती कि हमारे खेत अधिक उपजाऊ है । फिर भी उपज

कम होती है तुम रात दिन सोते हो । मेहनत नहीं करते हो । खेत भी पैसों के न होने से धीरे - धीरे गिरवी रखे जा रहे हैं ।

जय राम अपने खेत देखने गया । भाई के लहलहाते खेत के सामने अपने खेत देखे जो कि सूखे थे । जयराम ने जलन से फावड़ा उठाया और खेतों की मेड़ तोड़ने लगा । उसी समय एक अनजान व्यक्ति आया और टूटी मेड को ठीक करने लगा । जयराम ने कहा , "तुम कौन हो ?" उस आदमी ने बताया "मैं देवराम का कर्म - फल हूँ । जयराम ने अपना कर्मफल पूछा ।

आदमी ने हँस कर बताया कि तुम आलसी हो तो वह भी झाड़ियों में सोया होगा । जयराम ने झाड़ियों में एक मजदूर को खर्राटे भरते देखा । उसने मजदूर को कान पकड कर उठाया । मजदूर ने कहा कि अगर आप सदा ही खेत पर आते तो आप के खेत भी लहलहाते । जयराम ने गुडाई का फावड़ा उठाया और काम में जुट गया । उसके आदमी भी काम में जुट गये । थोडे दिनों में खेत लहलहाने लगे । दोनों भाई खेतों में साथ जाते और दिन भर काम करते थे । जयराम ने पत्नी से कहा कि अब गिरवी खेत भी छुड़ा लेंगे । अब मेरा कर्म -फल जाग उठा है । मैं अब कहूँगा कि आओ नहरें ठीक करें, गुड़ाई करें ।

1.कठिन शब्द -

हिन्दी	वागड़ी
गुजारा	गुजारो
बँटवारा	भाग पाड़वु
आपत्ति	आफत

हिन्दी	वागड़ी
लहलहाती	लेरती थकी
लायक	हरकु
गोड़ देना	गुडवु
गिरवी	गण्णे
निगरानी	नजर माए
अपरिचित	वगर उळखीतु
कठोर	काठु
निराई	निदवु

2. **निम्नलिखितु शब्दों को जाति , भाव और व्यक्ति वाचक वर्गों में बाँटो -**

1.	गुजारा	______	2.	बँटवारा	______
3.	भाई	______	4.	देवराम	______
5.	गंभीरता	______	6.	दिन	______
7.	खेत	______	8.	ताना	______
9.	पत्नी	______	10.	काम	______
11.	भाभी	______	12.	पंच	______
13.	खिलहान	______	14.	बर्तन	______
15.	ओढ़ना	______	16.	बिछोना	______
17.	गाय	______	18.	भैंस	______
19.	गाड़ी	______	20.	बैल	______
21.	नाली	______	22.	आंगन	______
23.	घर	______	24.	कंकड़	______
25.	पत्थर	______	26.	मेहनत	______

27. कमी	______	28. फसल	______
29. बचपन	______	30. बहाना	______
31. मजदूर	______	32. आस	______
33. अनाज	______	34. दशा	______
35. झगडा	______	36. जमीन	______
37. आदमी	______	38. कर्म	______
39. संकेत	______		

3. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ -

क. जयराम ने क्यों कहा कि हम लोग बंटवारा कर लें?
ख. जय राम की भाभी ने क्या कहा ?
ग. बँटवारा करते समय पंचों को क्यों बुलाया गया ?
घ. देवराम और जयराम के स्वभाव में क्या अन्तर था ?
ङ. बँटवारे के बाद जयराम गरीब क्यों हो गया ?

4. अपनी बातचीत में इनका भी उपयोग करो -

क. एक मरे और एक मजा करे ।
ख. गुजारा होना
ग. खाट तोड़ते रहना
घ. खर्राटे भरना
ङ. काम में जुटना
च. बहाने बनाना ।

5. **निम्नलिखित शब्दों के जोड़ो को ध्यान से देखो और नीचे दिये गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भर कर जानो**

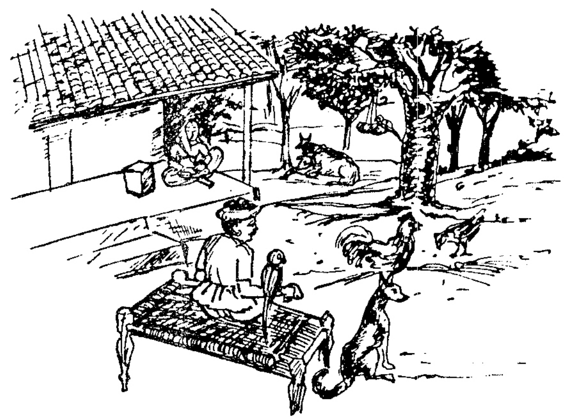
1- रात - दिन
2- भाई - बहन
3- इधर -
4- बर्तन -
5- घर -
6- आज -
7- गाय -
8- करम -
9- खेती -
10- माता -
11- ओढ़ना -

★★★★

पाठ -19

नाथू - तोता और थावरी

नाथू और उसकी पत्नी थावरी अरावली पहाड़ियों की तलहटी में एक छोटे से गाँव में रहते थे । इस गाँव के पास ही अमराइयाँ थी। नाथू बहुत अच्छे स्वभाव का व्यक्ति था छोटे बच्चे, जीव-जन्तु और पशु पक्षियों के प्रति दयावान था । उसने अपनी झोपड़ी के सामने पेड़ों पर पानी के बर्तन टांग रखे थे जहाँ दिन भर जीव जंतु पक्षी मंडराते रहते थे ।



थावरी को जीव -जंतुओं एवं पक्षियों का शोर गुल पसंद नहीं था । वह नाथू से इस बात पर लड़ाई किया करती थी । जीव जंतुओं में तोता, गौरेया , कबूतर , गिलहरिया , तीतर और बटेर आदि वहाँ शोरगुल मचात रहते थे । इनमें से एक तोता नाथू से बहुत हिलमिल गया था । नाथू उसे प्यार से गोद में बैठाकर आम, हरीमिर्च, चने की दाल आदि खिलाता । घर - आंगन में इधर उधर घूमता व कुछ बोलता भी रहता । जैसे - राम रामजी, राम -राम , जय -जय, एक ले लो , ले जाओ आदि । कभी कोई आता तो “कौन है ? ” कहता । इसमें थावरी भी खुश होती । नाथू तो बहुत खुश था

तोता कई बार अनाज बिखेर देता । बर्तन गिरा देता , और कपड़े गिरा देता था । थावरी । भाग - भाग । कहती । तोता भी दोहराता । एक दिन की बात हे नाथू किसी काम से बाहर चला गया । थावरी को सभी का ध्यान रखने को कहकर गया । थावरी ने न तो ध्यान दिया और न ही दाना - पानी दिया । तोता नाथू को नहीं देख कर टें -टें करता रहा । थावरी खिचड़ी खा रही थी व लाल मिर्च डालकर खाने लगी । मौका पाकर तोते ने थावरी की थाली से थोड़ी सी खिचड़ी खा ली । थावरी ने गुस्से से झाड़ू उठा कर तोते को मारी । तोता जान बचाकर घर से भागा । नाथू दो - चार दिन बाद आया और तोते को पुकारा -"तोतेराम , सीताराम । नाथू आया आओ राम ।" लेकिन वहाँ तोता भला कहाँ था ? उसे तो थावरी ने कहीं भगा दिया था ।

नाथू तोते को न देख कर दुःखी हुआ । नाथू ने थावरी से पूछा तोता कहाँ है ? थावरी ने सारी बात बता दी। थावरी पर नाथू को बहुत गुस्सा आया पर अब वह क्या कर सकता था ?

नाथू को तोते की बात याद आती रहती थी । एक दिन वह अमराइयों की ओर लकड़ी लेने गया । एक झाड़ी में उसे आवाज सुनाई दी कौन है ? कौन है? "नाथू खुश होकर बोला - "नाथू आया तोते राम ।"

नाथू की आवाज सुनते ही झाडियों से वही तोता निकल आया और कंधों पर फुदकने लगा । झाड़ियों में टें -टें , टीं -टीं का शोर होने लगा । नाथूनेकहा "यहाँ आ र तुम्ने पूरी गृहस्थी जम ली हैं । " सचमुच उस झाडी में छोटे छोटे तोते रहते थे । टें -टें, टीं -टीं कर रहे थे । तोते ने उन्हें चुप किया । शान्त होने पर तोते ने दो टोकरियों , एक बडी -एक छोटी में से नाथू को एक लेने को कहा । नाथू ने छोटी टोकरी उठाली

और घर ले गया ।थावरी को देते हुए कहा कि तोते ने दी है । टोकरी खोली तो देखा कि उसमें कीमती कपडे, मोती , मूगें , नेकलेस , अंगूठियाँ आदि थे ।

थावरी ने नाथू से कहा कि तुम बुध्दु हो , दोनों टोकरियाँ क्यों नहीं लाए । यह कहकर दूसरी टोकरी वह लेने चली । टोकरी लाते समय ठोकर खा कर गिर पड़ी व बेहोश हो गई

1. कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
अमराई	आंबावाड़ी
शोरगुल	गांगडवु
हिलमिल कर	अलि मलि नै
दुबक कर	दबि ने
अक्सर	केरेक - केरेक
चिढ़ती	सिड़ाती
परोसकर	आलि नै
बुरककर	भमराई नै
व्याकुल	घबरणु
क्रोध	गुसो
इंधन	बळाउ
पलभर	थोडिक वार
फुदकना	डाकवु
गृहस्थी	घेरबार
आवागमन	आवणु -जावु

2. नीचे दिये वाक्य पर ध्यान दो और उसी तरह के वाक्य बनाओ

नाथू की आवाज सुनते ही झाड़ियों से वही तोता निकल आया।

क. मैं आपकी बात सुन कर यहाँ चला आया ।

____

ख. मोहन खाना खाकर सो गया ।

____

ग. वह घर जाकर लोट गया ।

____

घ. तोता अपने मालिक से मिलकर खुश हो गया ।

____

3. समझो और बताओ : -

1- नाथू का स्वभाव कैसा था ?
2- थावरी कब खुश होती थी ?
3- तोता नाथू से कैसे मिला ?
4- तोते ने नाथू को भेंट में क्या दिया ?
5- थावरी ने भेंट के बाद क्या किया ?
6- इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

4. दिए गए गद्यांश को पढ़ कर निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखो -

नाथू की झोपडी के सामने पेड़ों पर पानी के बर्तन टंगे थे । छोटे मोटे जीव जन्तु और पक्षी दिन भर आते , शोर - गुल करते और नाथू के

चारों ओर मंडराते थे । तोते के घर के बाहर दो टोकरियाँ रखी थीं । एक छोटी और एक बडी । तोते ने नाथू से एक टोकरी लेने को कहा । नाथू ने छोटी टोकरी ली । थावरी ने एक टोकरी ही लाने पर नाथू को भला -बुरा कहा । वह दूसरी टोकरी लेने गई पर रास्ते में ही गिर पड़ी ।

1 - नाथू के चारों ओर जीव -जन्तु , पक्षी दिन भर क्यों मंडराते थे ?
2 - नाथू ने छोटी टोकरी क्यों उठाई ?
3 - थावरी ने नाथू को भला -बुरा क्यों कहा ?
4 - थावरी दूसरी टोकरी लेने क्यों गई ।

★★★★

पाठ -20

बहादुर नौजवान

चंबल के किनारे एक गाँव था , केशवरायपाटन । इस गाँव में एक बड़ा परिवार था । गुलाबसिंह इसी परिवार का था । परिवार बडा और सम्पन्न था। गुलाबसिंह ने दसवी करने के बाद पढाई बंद करदी। उसे काम धंधे में लगना पडा।

गुलाबसिंह बहुत परिश्रमी व्यक्ति था । आरम्भ में वह नदी में से रेत निकालने का काम करता था जिससे उसको गुजारे के लायक मजदूरी मिल जाती थी । इसी प्रकार वह किसी भी प्रकार के कार्य करने को तैयार रहता था । वह प्रत्येक कार्य को निष्ठा एवं लगन से पूरा करता था । उसकी कुछ आकांक्षाएँ भी थी । वह कुछ साहसिक कार्य भी करना चाहता था । एक दिन उसे मालूम हुआ कि जल सेना के लिए जवानों की भर्ती हो रही है । वह भर्ती होने के लिए भर्ती बोर्ड के पास पहुंच गया । स्वस्थ शरीर तथा बुद्धिमता के कारण उसे जल सेना में भर्ती कर लिया गया । उसके घर वालों ने लाख मना किया किन्तु वह नहीं माना और प्रशिक्षण के लिए गोवा पहुँच गया ।

नौ सेना के सैनिकों का कार्य साहस एवं हिम्मत का होता है । गुलाबसिंह सदैव ऐसे कार्यों में आगे रहता था । वह भारतीय नौ सेना का बहादुर और साहसी जवान बनना चाहता था । अभ्यास के समय एक दिन गुलाब सिंह जहाज की डेक पर खड़ा था कि उसने जहाज के एक भाग से धुँआ उठता देखा । वह तुरन्त दौड़कर जहाज के कप्तान के पास पहुँचा और उसे जहाज में आग लागने की सूचना दी । जहाज रोक दिया

गया । प्रत्येक सैनिक आग पर काबू पाने एवं जहाज को जलने से बचाने के कार्य में लग गया । आग बुझाने के सिलेंडर जिस स्थान पर पड़े थे, वहाँ तक पहुँचना मौत से खेलना था। परन्तु गुलाबसिंह अपने साथियों के सहयोग से वहाँ तक पहुँच गया और आग बुझाने में सफलता प्राप्त की ।

गुलाबसिंह की हिम्मत एवं साहस के कारण नौ सेना के जहाज एवं सैनिकों को बचा लिया गया । गुलाबसिंह के शौर्य , साहस, दूर -दृष्टि एवं सामयिक सूझ -बूझ की कहानी उसके अधिकारियों को जब मालूम हुई तो उसे शौर्य पदक के लिए प्रस्तावित किया गया । उसे राष्ट्रपति द्वारा शौर्य - पदक प्रदान किया गया ।

1. **एक बोले और सभी लिखें -**

   कुटुम्ब , सहपाठियों , भर्ती , बोर्ड , सिलण्डर ,

   हृष्ट -पुष्ट , राष्ट्रपति , शौर्य - पदक , प्रस्तावित , नियुक्त ।

2. **कठिन शब्द -**

हिन्दी	वागड़ी
चंबल	संबल
कस्बा	गाम
परिवार	परिवार
कुटुम्ब	कुटूम
भविष्य	भविस
समस्या	तकलिप
सहपाठी	हाते भणवा वाळो

हिन्दी	**वागड़ी**
लगन	लगन
काम धन्धा	काम काज
आकांक्षाएं	आसाएं
हृष्ट -पुष्ट	जाडु
प्रशिक्षण	टेरनिंग
अभ्यास	कोसिस

3. अन्तर जानो-

(जल सेना , थल सेना , वायु सेना)
(हिम्मत , साहसी)
(स्थिति , परिस्थिति)
(लहराती , उमडती , उफनती)
(भविष्य , वर्तमान , भूतकाल)
(अपेक्षाएँ , आकांक्षाएँ)

4. नीचे दिये गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो-

परिश्रमी	मेहनती
प्रकार	- - - -
तत्पर	- - - -
साहस	- - - -

5. समझो और बताओ-

क - गुलाब सिंह के जल -सेना में चयन होने पर घर वालों ने मना क्यों किया ?

ख - गुलाब सिंह में कौन से गुण थे ? जिससे वह जल सेना में चुन लिया गया ?

ग - गुलाब सिंह ने जहाज को कैसे बचाया ?

6.इनमें से मुहावरे छाँटो और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करो

1-मौत से खेलना 2- गुजारा होना

3-आग लगना 4- धुआँ उठना

5-जान पर खेलना

7. दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

गुलाब सिंह का ध्यान आग बुझाने के सिलेण्डरों की ओर गया । वे जिस स्थान पर थे , वहाँ तक पहुँचना मौत से खेलना था । आग चारों ओर फैलती ही जा रही थी । गुलाबसिंह जान पर खेलकर सिलेणण्डरों तक पहुँच गया । साथी सैनिकों की सहायता से उसने आग पर काबू पा लिया ।

क - गुलाबसिंह का ध्यान किस ओर गया ?

ख - सिलेण्डरों तक कौन पहुँचा ?

ग - किसकी सहायता से गुलाबसिंह ने आग पर काबू पाया ?

★★★★

पाठ - 21

गीत यहाँ खुशहाली के



युग -युग से हम रहे उपासक
गैंती और कुदाली के ।
हल की नोक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के ।।

घुँघरू वाले बैलों के जब,
मिट्टी महके पाँव तले
बहे पसीना तेज धूप में,
या बादल की छाँव तले ।।



दर्शन होते इन्द्र - धनुष के ,
या संध्या की लाली के ।
हल की नोक लिए लिखते हम ,
गीत यहाँ खुशहाली के ।।

कोयल, मोर, पपीहे गाते
श्याम घटा घहराती है ।
मधुर स्वरों में कोकिल कंठी ,
बहुएँ गीत सुनाती है ।।

वन-बागों में झूले बँधते ,
जब पेड़ों की डाली से ।
हल की नोक लिए लिखते हम ,
गीत यहाँ खुशहाली के ।।

पर्वत पर से नदी उछलती ,
मैदानों में आती है ।
हरियाली की चूनर धानी,
खेतों में लहराती है ।।

मोती जैसे दाने हँसते ,
हर गेहूँ की बाली के ।
हल की नोक लिए लिखते हम ,
गीत यहाँ खुशहाली के ।।

उत्पादन की अलख जगाती ।
फसलें सभी जवानों में ।
चौपालों पर झाँझ - मजीरे ,
बजते नये तरानों में ।।

गली -गली में उत्सव मनते,
होली और दीवाली के ।
हल की नोक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के ।

★★★★★

पाठ -21

गीत यहाँ खुशहाली के

वर्षों से हम मेहनत करने वाले रहे हैं। मेहनत को पूजा मानते हैं । गैंती और कुदाली उठा कर मेहनत करते रहे हैं । हल चलाकर अनाज पैदा करते रहे हैं जिससे खुशहाली आती है ।

बैलों के पावों के घुघरू की आवाज से पावों के नीचे मिट्टी महक उठती है, तेज धुप में पसीना बहता हौ, बादल छाए रहते हुए भी । सात रंगों का इन्द्रधनुष तनता हैया संध्या की लाली दिखाई देती है । हल की नोक से हम मेहनत कर खुशहाली लाते हैं ।

प्रकृति की लीला को क्या कहें - काली काली घटाएँ उमड घुमड कर आती हैं तो कोयल , मोर, पपीहे गा उठते हैं । कोयल की तरह मीठी आवाज में बहुएं गीत सुनाती हैं । वन बागों में झूले पड़ जाते हैं । हल की नोंक से हम मेहनत कर खुशहाली लाते हैं ।

पर्वत से नदी उछलती मै दानों में आती है। अनाज देने वाली धरती , लहलहा उठती हैं , मोती जैसे दाने हर गेहूँ की बाली में हँसते हैं । हल की नोंक से मेहनत कर हम खुशहाली लाते हैं ।

उत्पादन बढ़ जाता है । फसलों के अनाज को देख मेहनत करने वाले - चौपाल पर झांझ मजीरे बजाते हैं , नए - नए तराने गाते हैं ।

होली और दीवाली के त्योहारो पर गली गली में उत्सव मनाते हैं । हल की नोंक से मेहनत कर हम खुशहाली लाते हैं ।

1.कठिन शब्द

हिन्दी	**वागड़ी**
खुशहाली	खुशी ना दाड़ा
युग - युग	जुग -जुग
उपासक	भगत
छाँव	साइलो
इन्द्र-धनुष	मेहबाब नी तुणे
संध्या	आतमनु , हाँज
घटा	घटवाले
लहराती	लेरीली
कोकिल कंठी	कोएल नी बुली
उत्पादन	पैदावर
उत्सव	तेवार
धनरधानी	धान नी लिलि सुनडी

2. नीचे दिये गए पद्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दो -

युग - युग से हम् रहे उपासक ,
गैंती और कुदाली के ।
हल की नोंक लिए लिखते हम ,
गीत यहाँ खुशहाली के ।

क. लम्बे समय से हम किसके उपासक रहे है ।

ख. हल की नोंक से लिखने का क्या आशय है ।

ग. खुशहाली के गीत का क्या अर्थ हैं ?

3. शब्दों के आगे दिये गए कोष्ठक में उनके सही अर्थ लिखों -

शब्द	**अर्थ**
उपासक	( ) गीत की लय
खुशहाली	( ) हरी भरी चुनड़ी
घहराना	( ) जोश पैदा करना
धानी चूनर	( ) सुख समृद्धि का समय
अलख जगाना	( ) उपासना या भक्ति करने वाला
तराना	( ) घुमड-घुमड कर आना

4. अपने शब्दों में सरल अर्थ करो -

क. मिट्टी महके पाँव तले ____________

ख. श्याम घटा घहराती है । ____________

ग. मधुर स्वरों में कोकिल कंठी
बहुएँ गीत सुनाती हैं । ____________

घ. हरियाली की चुनर धानी खेतों
में लहराती है । ____________

ङ. उत्पादन की अलख जगाती, फसलें
सभी जवानों में । ____________

5. समझो और बताओ-

क. किसके पैरों तले मिट्टी महकती है ।

ख. इन्द्र धनुष किस मौसम में दिखाई देता है ।

ग. बरसात के मौसम में कौन -कौन से पक्षी गीत गाते हैं ।

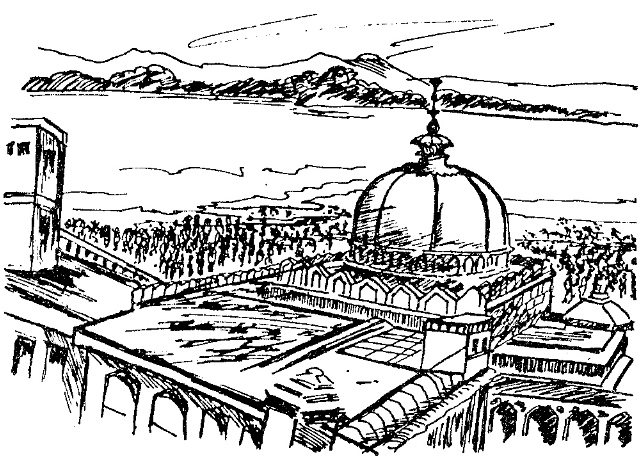
घ. इस कविता में किन -२उत्सवों को मनाने की बात कही गई है ।

ङ. धरती माता ने कैसी चूनर पहनी है ।

★★★★

पाठ -22

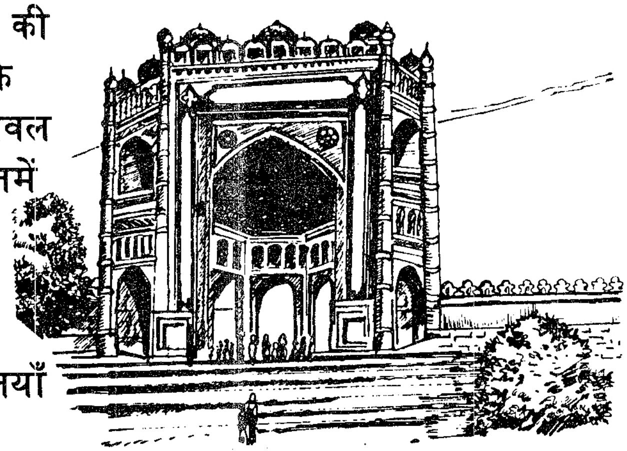
अजमेर शरीफ



अजमेर एक ऐतिहासिक नगर है । प्राचीन काल से वर्तमान समय तक इसकी अपनी कहानी है । यहाँ कई दर्शनीय स्थान हैं जिनमें चारों ओर पहाड़ियों के बीच अपना सागर झील , तारागढ़ का किला, बजरंगगढ़ का मन्दिर , सोनियों का मंदिर , ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह , तीर्थराज पुष्कर आदि प्रमुख हैं । प्रति वर्ष यहाँ ख्वाजा साहब का उर्स तथा पुष्कर में कार्तिक माह में मेला लगता है । इनमें दूर दूर से लोग आते हैं । खूब भीड़ -भाड़ बनी रहती है ।

शहर के मध्य में ख्वाजा साहब की दरगाह है । उर्स के समय जायरीन और मुरीदों का ताँता लगा रहता है । व्यापारियों एवं खरीददारों की भीड बनी रहती है । अजमेर में देश के कोने कोने से आने वालों की संख्या लाख -डेढ़ लाख हो जाती है। विदे शों से भी लोग यहाँआते हैं । ये लोग मन्नत मानने और चढ़ाने आत हैं। इस अवसर पर विशोष रेलगाडियाँ चलाई जाती हैं । इतनी भीड़ होने से ऐसा लगता है कि अजमेर के राज मार्ग और बाजार मानो सिकुड़ गये हैं ।

दरगाह का मुख्य द्वार बहुत विशाल है । चारों तरफ गुलाब व इत्र की खुशबु फैली रहती है । गरीब नवाज़ के सालाना उर्स के दिन जन्नती दरवाजा भी खुला रहता है । यहाँ मन्नत मांगने व चढ़ाने वालों की भीड़ लगी रहती है । दरगाह के आंगन में 60 और 40 मन चावल पकाने वाले दो देग है । जिनमें दालें , मेवा , घी और अन्य तरावट की चीजें पकाई जाती है । बारादरी में तथा महफिल खाने में कव्वालियाँ होती हैं । दूर - दूर से कव्वालों की टोलियाँ आती हैं । मजार पर चादर चढ़ाई जाती हैं । देग में पके चावलों की लूट होती है , जिसे प्रसाद के - रूप में सभी ग्रहण करते हैं । जुम्मे की नमाज के साथ गरीब नवाज का उर्स समाप्त होता है । श्रद्धा लेकर आने वाले सभी यात्री विश्वास लेकर अपने घर लौट जाते हैं । ख्वाजा साहब के दरबार में सब एक हैं ।



1. **कठिन शब्द** -

हिन्दी	वागड़ी
शिखर	ठेट डूँगरा माते
मेला	मेळो
व्यापारी	वेपारी
अपार	कईक
जन - समूह	मनकाँ नो भेळो
मन्नत	मानता
मुसाफिर	वाटारू
विदेश	परदेस
पहनावा	पेरण
खचा खच	ठसा ठस
निगाह	नजर
धकेलना	ढेलवु
सिकुडना	सल पडवु
महकना	मोकवु
रंक	फकीर

2. **निम्न लिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों का प्रयोग करते हुए दो दो वाक्य बनाइए**

(अ) जिसमें दूर-दूर से लोग आते है, खूब भीड़- भाड़ बनी रहती है ।

____

____

(ब) उर्स के समय जायरीन और मुरीलों का तांता लगा रहता है

____

____

(स) चारों तरफ इत्र और गुलाब की खूशबू फैली रहती हे ।

____

____

(द) जहाँ मन्नत माँगने वालों की भीड़ लगी रहती हैं ।

____

____

(य) मजार पर चादर चढ़ाई जाती है ।

____

____

3. नीचे दी हुई क्रियाओं के पुल्लिंग रूप बना कर वाक्यों में प्रयोग करो

क. बनी रहती है ____________________

ख. फैली रहती है ____________________

ग. लगी रहती है ____________________

घ. आती है ____________________

ङ. जाती है ____________________

4. ध्यान दो-

(क) 1- न तो रेलगाडियों में और न स्टेशन पर ।

2- सभी तरह के लोग उत्तर के भी , दक्षिण के भी

3- जिधर दृष्टि डालो भीड़ ही भीड़ । आदमी ही आदमी बच्चे ही बच्चे । औरतें ही औरतें ।

5. जोड़े मिलाओ

क.	चमचमाते शिखरों वाला	( )	1.	अजमेर
ख.	अजमेर के बीचों बीच	( )	2.	सोनियों का मंदिर
ग.	हजारों वर्षों की यादों का शहर	( )	3.	मुख्य द्वार
ञ.	कितना भव्य, कितना आलीशान	( )	4.	रेलगाडिया
च.	दर दूर से आने वाली	( )	5.	पहनावा
छ.	दरगाह का	( )	6.	लोग

6. समझो और बताओ -

1 - अजमेर के दर्शनीय स्थानों के नाम लिखो ।

2 - उर्स के समय अजमेर में क्या परिवर्तन होता है ?

3 - "मन्नत मानना और मन्नत चढ़ाना" इसका अर्थ बताओ ।

4 - देग कितने प्रकार के होते हैं और कब काम आते हैं ?

5 - अजमेर का राज मार्ग कब सिकुड़ जाता है ?

7. **दिए गए गद्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर लिखो -**

अजमेर एक ऐतिहासिक नगर है । यह तीर्थ राज पुष्कर और ख्वाजा साहब की दरगाह के लिए प्रसिद्ध है । प्रति वर्ष ख्वाजा साहब का उर्स होता है । पुष्कर में कार्तिक मास में मेला भरता है । उर्स में दूर दूर से और देश विदेश से लोग आते हैं । इन दिनों एक डेढ़ लाख व्यक्तियों की भीड़ हो जाती है । उर्स पर इत्र गुलाब के फूल, चादरें चढ़ाई जाती हैं । मन्नत मांगने और मन्नत चढ़ाने लोग आते हैं । जुम्मे की नमाज होती है

देग में चावल पकाते हैं । प्रसाद रूप में इसे सभी लेते हैं । कव्वालियाँ होती है । नमाज के बाद उर्स समाप्त होता है । और सभी अपने घर चले जाते हैं ।

1 - अजमेर क्यों प्रसिद्ध है ?
2 - उर्स में लोग क्यों आते हैं ?
3 - आखरी नमाज कब होती है ?
4 - देग में क्या पकाया जाता है ?
5 - कार्तिक मास में किस स्थान पर मेला लगता है ?

★★★★

पाठ -23

बेईमान कौन ?



बत्रा साहब बुंदी के एक सरकारी कार्यालय में काम करते थे । वे बड़े - नेक व भले आदमी थे । सरकारी काम से दौरे पर अक्सर जाते रहते थे । बत्रा साहब के लड़के का नाम बबलू था । पढ़ने में तेज तर्राट व बड़ा होनहार था । वह प्रश्न पूछ कर बत्रा साहब की नाक में दम कर दिया करता था । उनकी ईमानदारी की बातें चारों तरफ होती थीं । बबलू अपने पिता की ईमानदारी के बारे में सुनकर बहुत खुश होता था । उसके पिता हमेशा कहते कि मनुष्य की परख उसके कर्तव्य का पारितोषिक है । अपने बेटे को भी वे वैसा ही बनाना चाहते थे ।

बबलू की बड़े दिनों की छुट्टियाँ हुई । इन छुट्टियों में उसके पिता उदयपुर जाने वाले थे। बबलू घर पर अकेला रहेगा , ऐसा सोच उसे भी साथ ले जाने की बात उन्होंने मान ली ।

बस स्टेण्ड पर आकर उन्होंने देखा कि रात्रि सेवा की दो बसे कोटा से उदयपुर जाती हैं । आरक्षण कोटा से होता है । एक बस पहले बूंदी से कोटा जाती हैं और पुनः बूंदी होती हुई उदयपुर जाती है । बबलू के पिता ने भीड़ के कारण बूंदी से बैठना कठिन समझा साथ ही कोटा जाना भी ठीक नहीं समझा । अतः सोचा की गाड़ी में सीट का आरक्षण अगर यहीं से हो तो कैसा रहे । इसी विचार से खलासी से बात कर पचास रूपये का नोट दे दिया । खलासी ने प्रयत्न करने की बात कही । आरक्षण न हो पाया तो उनके लिए सीट खाली रखवाने की बात भी कही । बत्रा साहब बस स्टेण्ड पर पहुँचे। बबलू को सामान के पास छोड़ कर पान लेने गये । उन्होंने अपने मित्र शर्माजी से बाहर जाने और आरक्षण के लिए खलासी को रूपये देने की बात कही । खलासी का नाम उनको मालूम नहीं था। शर्माजी ने कहा कि आप भोले है । और दुनियाँ वालों को नहीं जानते है । धोखा खाने की बात पर बत्रा साहब ने कहा कि मैंने आज तक किसी को धोखा नहीं दिया है अतः आज परख हो जाएगी । वहीं यादव साहब आये । शर्माजी ने बत्रा साहब के टिकिट की बात कह सुनाई । यादव साहब ने कहा कि जरूर वह टिकिट लेता आएगा । कोटा से बूंदी तक वह किसी को बैठाकर लाएगा और किराया जेब के हवाले करेगा ।यात्री से टिकट मेरे पास है, कहेगा आदि ।

बत्रा साहब को यादव साहब की बात से संतोष हुआ । इतने में बस आई । भीड़ अधिक थी । उनकी नजर खलासी को ढूँढने लगी । तभी खलासी ने आवाज लगाई और कहा कि आपकी सीट आगे है । बत्रा साहब व बबलू अपनी सीट पर बैठकर सोचने लगे कि उनका पैसा बेकार नहीं गया । टिकट मांगने पर खलासी ने कहा कि आप निश्चिंत रहिए और कंडक्टर टिकट मांगे तो कहिए कि उस्ताद की सवारी हूँ । ऐसे में बत्रा साहब क्या करते ? मजबूरी हो गई , यात्रा भी करनी थी । सर्दी की रात थी , सीट भी मिल गई थी । इतने में परिचालक ने कहा कि जिनके पास

टिकट न हो वह नीचे उतर जाएँ । बत्रा साहब घबराए । धन भी गया धरम भी । इतने में चालक ने कहा कि ये मेरे साथ हैं और सेठजी के काम जा रहे हैं । बबलू ने दखा कि पिता के मुँह पर चमक नहीं है जो हमेशा रहती है । उसने पिता से रुपये देने की बात कही । टिकट नहीं देने को बेईमानी कहा । पिता ने कहा कि सीट मिल गई है इसलिए यों ही जाना पड़ेगा । हम चाहे ईमानदार बनना चाहें किन्तु लोग हमें ईमानदार नहीं रहने देंगे । बबलू ने बात समझी और संतोष हुआ ।

1.कठिन शब्द

हिन्दी	बागड़ी
सरकारी	सरकारी
कार्यालय	ओपिस
भला	भलो
दौड़-धूप	दोड़-धाम
परेशान	परेसान
गोरा - चिट्टा	भूरो भट
तेज - तर्राट	फास
सीना	साती
पारितोषक	एलम
खचाखच	ठसा ठस
तत्तकाल	तरत
धोखा	धुको

2. दिये गए शब्दों का सही अर्थ खोजकर कोष्ठक में इसका क्रमांक लिखो

कार्यालय	( )	1. जरासी भी
मजबूरी	( )	2. बिना चिन्ता के
भलमनसाहत	( )	3. रास्ता देखना
जिक्र करना	( )	4. दफतर
पारितोषिक	( )	5. लाचारी
होनहार	( )	6. इनाम
होसियार	( )	7. दक्ष
रात्रि सेवा की बस	( )	8. भरोसा हो जाना
आरक्षण	( )	9. जो बस रात को यात्रा करे
निश्चिंत	( )	10. कहना
आश्वस्त होना	( )	11. भले आदमी का गुण
प्रतीक्षा करना	( )	12. अच्छे गुण वाला
तनिक भी	( )	13. जगह पहले से रुकवा रखना

3. समझो और बताओ -

क - बत्रा साहब को कहाँ जाना था ?

ग - बत्रा साहब ने टिकिट के लिए रुपये किसे दिये थे ?

घ - शर्माजी ने बत्रा साहब को क्या कहा ?

ङ - " धन भी गया और धरम भी गया " ऐसी बात बत्रा साहब ने क्यो सोची

च - बबलू ने पिता से क्यों कहा कि यह तो बेई मानी है ?

घ - इस कहानी में आप किस किस को बेईमान मानते हैं और क्यों ?

4. **दिये गए गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये -**

बबलू के पिता बत्रा साहब बूँदी के एक सरकारी कार्यालय में काम करते थे । वे बड़े नेक और भले आदमी थे । सरकारी काम से वे दौरे पर जाते रहते थे। इस दौड़ धूप से वे परेशान तो थे ही पर मजबूरी जो थी ।

क. बबलू के पिताजी का क्या नाम था ?
ख. बबलू के पिताजी कहाँ काम करते थे ?
ग. बत्रा साहब का स्वभाव कैसा था ?

★★★★★

पाठ - 24

पतंगों का मौसम

मौसम आज पतंगों का है ।
नभ में राज पतंगों का है ।।
इन्द्र -धनुष के रंगों का है ।
मौसम नई उमंगों का है ।।

निकले सब ले डोर पतंगें ।
सुन्दर - सी चौकोर पतंगे ।।
उड़ा रहे कर शोर पतंगें ।
देखो चारों ओर पतगें । ।

उड़े उतंगे बस्ती -बस्ती ।
कोई महँगी , कोई सस्ती ।।
पर न किसी में फूट परस्ती ।
उड़ा -उड़ा सब लेते मस्ती ।।

चली डोर पर बैठ पतंगें ।
इठलाती - सी ऐंठ पतंगें ।।
नभ में कर घुसपैठ पतंगें ।
करें ग्रहों से भेंट पतंगें ।।

हर टोली ले खड़ी पतंगे ।
कुछ छेटी कुछ बड़ी पतंगें । ।
आसमान में उड़ीं पतंगें ।
पेंच लड़ाने बढ़ी पतंगे । ।

कुछ के छक्के छुट रहे हैं ।
कुछ के डोर टूट रहे हैं । ।
कुछ लंगी ले दौड़ रहे हैं ।
कटी पतंगें लूट रहे हैं । ।

★★★★

पाठ - 24

पतंगों का मौसम

पतंगों के मौसम में आकाश में रंग बिरंगी पतंगें उड़ती हैं । सम्पूर्ण आकाश इन्द्र धनुषी रंगों से भरा दिखाई देता है । सब ओर खुशी दिखाई देती है । सब लोग डोर और पतंगें ले कर निकल पड़ते हैं । पतंग उड़ाते समय सभी बहुत आवाज करते हैं । प्रत्येक बस्ती में पतंगें उड़ती हैं । पतंगों का मूल्य भी अलग -अलग होता है । कोई पतंग सस्ती होती है तो कोई महंगी होती है । पतंग उड़ाते समय भेदभाव नहीं होता है । और इन्हें उड़ाने का आनन्द लेते हैं ।

इठलाती हुई , ऐंठती हुई पतंगें आकाश में घुसपैठ कर रही हैं ऐसा लगता है जैसे वे ग्रहों से मुलाकात कर रही हैं ।

आकाश में पतंगें बहुत दूर -दूर तक उड़ती हैं । पतंग उड़ाने वालों की अलग -अलग टोलियाँ बन जाती हैं । प्रत्येक टोली अपनी पतंग उड़ाती है । एक टोली दूसरी टोली की पतंग काटने का प्रयास करती है । दो पतंगों को लड़ाने एवं डोर के काटने से पतंग गिर जाती है । इसे पेंच लड़ाना कहा जाता है । पेंच लड़ाने के समय कुछ लोग हार कर पतंग लड़ाना छोड़ देते हैं । तो कुछ लोग कटी हुई पतंगें लूटने के लिए दौड़ते रहते हैं ।

1. कठिन शब्द -

हिन्दी	वागड़ी
मौसम	मुसम
नभ	अंगास
शोर	घांगडवु
बस्ती	वस्ती
इठलाती-सी	मौज मारती थकी
ग्रह	गर
पेच लड़ाने	एक बिजा ने काटवु
छक्के छुटना	पसाडी पड़ी जावु

2. निम्न शब्दों के सही रूप सामने, दिये वाक्यों में करो

(पतंग) मैं ने - - - - - - - - - - - खरीदीं ।

(बस्ती) मंत्री ने सभी पुरानी - - - - - - - - को गिरवा दिया ।

(लडका) उन - - - - - - ने पाठ याद नहीं किया

(टोली) बच्चों की - - - - - - - खेल रही थी ।

(लड़की) उन - - - - - ने गीत नहीं गाया ।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का अपने शब्दों में अर्थ बताओ-

मौसम आज पतंगों का है ।
नभ में राज पतंगों का है ।।
नभ में कर घुसपैठ पतंगें ।
करें ग्रहों से भेंट पतंगें ।।

4. समझो और बताओ -

(क) पतंगों के मौसम में तुम्हारे मन में क्या - क्या विचार उठते हैं ?

(ख) पतंग उड़ाते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

5. दिये गये गद्यांश को पढ़ कर नीचे लिखे प्रश्नों - के उत्तर दो -

मौसम आज पतंगों का है ।
नभ में राज पतंगों का है ।।
इन्द्र - धनुष के रंगों का है ।
मौसम नई उमंगों का है ।।

(क) आज मौसम कैसा है ?
(ख) नभ में किसका राज है ?
(ग) इन्द्र - धनुष में कितने रंग होते हैं ?

★★★★

पाठ -25

वाह रे शेर

वर्षों पुरानी बात है । दिल्ली की गद्दी पर बादशाह औरंगजेब राज्य करता था । जोधपुर के महाराजा तब शाही सेना के सेनापति थे ।

बादशाह को शेरों की कुश्ती देखने का अजीब शौक था । आए दिन ऐसी कुश्तियाँ होती रहती थी । और वे भी शेरों की । पर बादशाह तो बादशाह ठहरा । अपनी मर्जी का मालिक । सचमुच रोंगटे खड़े कर देने वाले दृश्य होते थे उनमें ।

एक दिन दरबार में ऐसी ही कुश्ती पर चर्चा चल पड़ी । बादशाह ने हुक्म दिया तो तत्काल ही कुश्ती का प्रबन्ध हो गया । कटघरे में शेरों के पिंजरे लाए । भूखे शेर छूटे , दहाड़े और आपस में भिड़ गए ।

लोग उचक -उचक कर कुश्ती देखने लगे । बादशाह की बौंहें खिल गई । पास ही महाराजा जसवंतसिंह बैठे थे । बादशाह बोले , " जसवंतसिंह । कभी तुम्हारे शेर की कुश्ती हमारे शेर से हो जाए , देखें कौनसा शेर जीतता है ।"

"जहाँपनाह की जैसी आज्ञा , "जसवंतसिंह ने कहा ।"तो फिर कब?"

" जब भी जहाँपनाह का हुक्म हो । मेरा शेर कुश्ती के लिए हर वक्त तैयार रहता है । "

" शाही शेर भी तैयार है जसवंतसिंह । कल ही कुश्ती हो जाए । ढिंढोरा पिटवा दो ।"

दूसरे दिन शेरों की कुश्ती देखने के लिए लोग इकट्ठे हो गए । राजा महाराज आए, राव - उमराव आए और अपने अपने आसन पर आकर बैठ गए । बादशाह भी अपने सिंहासन पर आ बिराजे । शाही पोशाक पहने जसवंतसिंह पहले ही अपने स्थान पर आ बैठे थे । आज उनके साथ उनका सोलह सत्रह वर्ष का राजकुँवर भी था । हट्टा -कट्टा और कसे - कसाए बदन वाला किशोर ।

बादशाह ने जसवंतसिंह की ओर देखा ।

जसवंतसिंह बोले, "जहाँपनाह। मेरा शेर तो तैयार है। आपके हुक्म का ही इंतजार है।"

बादशाह ने वजीर को संकेत किया । हुक्म मिलते ही सारी व्यवस्था हो गई । शाही शेर का पिंजरा कटघरे में ले आया गया । जसवंतसिंह ने भी अपने कँवर को इशारा किया । कुँवर तो प्रतीक्षा में था ही । पलक झपकते ही उसने कटघरे में छलाँग लगा दी । एक और कुँवर तो दूसरी ओर शाही शेर। दोनों एक दूसरे के आमने सामने । लड़ने भिड़ने को तैयार । शेर दहाड़ा तो कुँवर ने भी हुँकार भरी । चारों ओर सन्नाटा छा गया । ऐसे शेरों की कुश्ती आज तक नहीं हुई थी । शेर दहाड़ा तो कुँवर ने भी हुँकार भरी, शेर ने छलांग लगाई तो कुँवर ने वार बचाकर शेर के जबडे पकड लिए । शेर नौहत्या था तथा भूखा भी था । सभी उपस्थित व्यक्ति यह नजारा देख भौंचक्के थे ।

कुश्ती चल रही थी । शेर और कुँवर दोनों लहुलुहान हो गये थे । कुँवर ने जब कटार निकाली तो महाराजा जसवंतसिंह ने कहा " निहत्थे पर हथियार उठाओगे मेरे शेर ।" इतना सुनकर कुँवर ने कटार फैंक दी । कुँवर ने देखते ही देखते नौहत्या शेर का जबडा पकड़ कर उसे चीर दिया । शेर ढेर हो गया । बादशाह उठकर चल दिये । जसवंतसिंह ने कुँवर को अपनी छाती से लगा लिया ।

1. एक बोले, सभी लिखें -

रोंगटे खड़े कर देने वाला दृश्य
ढिंढोरा पिटवा दो
चारों ओर सन्नाटा छा गया ।
सभी भौचक्के रह गये ।
शेर लहुलुहान हो गये ।
जय - जयकार करने लगे ।

2. कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
गद्दी	गादी
शोक	सोक
प्रबन्ध	बन्दवस
आसन	जगा
संकेत	एलण

हिन्दी	वागड़ी
इशारा	इसारो
हुँकार	उकवु
सन्नाटा	सनाटो
निहत्या	वगर अतियार वाळु
नजारा	खेल
लहुलुहान	खुनाळु
जोश	जुस

3. अन्तर जानो -

लड़ना - भिड़ना

पिंजरा - कठघरा

आसन - सिंहासन

गद्दी - राज गद्दी

काटना - चीरना

4. समझो और बताओ -

क - बादशाह शेरों की कुश्ती क्यों करवाता था ।

ख - " मेरा शेर कुश्ती के लिए हर वक्त तैयार है ।" यह वाक्य किसने कहा था तथा इसका क्या आशय था ?

ग - बादशाह उठकर क्यों चला गया ?

घ - महाराजा ने कहा -"निहत्थे पर हथियार उठाओगे मेरे शेर ।" महाराजा ने ऐसा क्यों कहा ?

ङ - इस कहानी का शीर्षक " वाह रे शेर ।" क्यों रखा गया है ?

5. **दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये-**

कुँवर ने कटार फैंक दी । राजपूती खून में जोश उमड़ा । देखते ही कुँवर शेर का जबड़ा पकड़ कर उसे चीर दिया । नौहत्या शेर वहीं ढेर हो गया । बादशाह अक़स्मात उठकर चले गए । जसवंतसिंह ने अपने शेर को छाती से लगा लिया । लोग जय-जयकार करने लगे ।

क - कटार किसने फैंक दी ?
ख - जसवंत सिंह ने किसे छाती से लगा लिया ?
ग - लोग किसकी जय-जयकार करने लगे ?

★★★★

पाठ - 26

मेरी डायरी

मैं 11 अगस्त 1983 का अपने दोस्त शब्बीर के बार-बार बुलाने पर कोटा पहुँचा । शब्बीर स्टेशन पर मुझे लेने आया और अपने घर ले गया । उसका घर बहुत बड़ा साफ - सुथरा , सजा हुआ था। वहाँ पर उसके अब्बा अम्मा से मिला और बात -चीत की । चाय -नाश्ता कर कुछ आराम किया ।

शब्बीर मुझे कोटा घुमाने ले गया । औद्योगिक क्षेत्र में बड़े - बड़े कला कारखाने देखे । इनकी चिमनियाँ धुआँ उगल रही थी । लोगों की भीड़ लगी थी । शहर ऐसा लगा , मानो भारत का दूसरा कानपुर हो । छावनी चौराहे के पास बना हवाई अड्डा देखा । अब यह आबादी के बीचों - बीच आ गया है और चहल पहल भी अधिक हो गई है । पूर्व में यह अधिक सुनसान इलाका था । चम्बल उद्यान कोटा का आकर्षक स्थान है । इस सुहावने व मनमोहक बगीचे को सभी देखने आते हैं । कोटा बैराज़ चम्बल बांध पर बनाया गया है । वैज्ञानिकों का यह अनोखा करिश्मा ही है । अभियन्ताओं ने लगन व परिश्रम से इसे बनाया है । इसके दाईं और बाईं ओर दो नहरें निकलती हैं । ये नहरें कोटा व बून्दी की धरती को सींचती हैं । कोटा का ताप बिजली घर देखा जो राज्य की बिजली की आवश्यकता को पूरा करता है ।

12 अगस्त 1983 को मैं और शब्बीर राणा प्रताप - सागर बाँध देखने गये । यहाँ परमाणु शक्ति से चलने वाला बिजली घर है । शब्बीर के चाचा अभियन्ता हैं । रास्ते में मौसम अच्छा हो गया , रिमझिम बरसात , घने पेड़ , ऊँची - उँची पहाडियाँ और घुमावदार उतार - चढ़ाव रास्ते पार कर

रावत भाटा पहूँचे । शब्बीर के चाचा के साथ राणा प्रताप सागर बांध को देखने गये । चंबल का पानी दूर - दूर कई मीलों तक फैला देखा । बांध के नीचे बना बिजली घर देखा । बांध के पानी को बिजली घर तक ले जाने के लिए सुरंगे बनाई गई हैं । नियंत्रण कक्ष में असंख्य तारों और खंभों के जाल देखे । लाल पीली बत्तियाँ वहाँ बैठे -बैठे ही बताती हैं कि कौन सी लाइन सही चल रही है और कौनसी खराब है । वहाँ टरबाइन भी बहुत विशाल है ।

बाँध से लगभग चौदह किलोमीटर दूर अणु बिजली घर है । इसमें जेनरेटर लगे हैं । जेनरेटर भारी पानी से चलते हैं । इसमें करोड़ो पूर्जे लगे हुए हैं ।

रावत भाटा अणुशक्ति का प्रमुख केन्द्र है । यह राजस्थान का ही नही भारत का भी महत्वपूर्ण केन्द्र है । भारतीय वैज्ञानिकों का यह एक करिश्मा और नये जमाने का नया तीर्थ है । यह चम्बल की देन है ।

1. इन मुहावरों के अर्थ बताओ -

1 - तबियत खुश होना
2 - दंग रह जाना
3 - चकित रह जाना
4 - मन प्रसन्न होना
5 - रोनक बीखेरना

2. **बाईं तरफ के शब्दों से सही मेल खाते शब्द दाहिनी तरफ से चुनो-**

अ	रिमझिम करती	( )	1.	पहाडियाँ
ब	सुहावना	( )	2.	फुहारें
स	ऊँची - ऊँची	( )	3.	मौसम
द	टेढे - मेढ़े धुमावदार	( )	4.	रास्ते
य	धुआँ उगलती	( )	5.	कोटा
र	भारत का दूसरा कानपुर	( )	6.	राणा प्रतापसागर
ल	नए जामाने का तीर्थ	( )	7.	नहेंर
व	अच्छी खासी	( )	8.	बैंक
श	सजी - सजाई	( )	9.	हवेली
ष	धरती को धन - धान्य से भरने वाली	( )	10.	चिमनियाँ

3. **निम्नलिखित क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग जानो -**

क्रिया	वाक्यों में प्रयोग
तौलने लगना	वह सब्जी तौलने लगा है ।
जाने लगना	- - - - - - - - - - - - -
खाने लगना	- - - - - - - - - - - - -
करने लगना	- - - - - - - - - - - - -

तैरने लगना - - - - - - - - - - - - - -
दौड़ने लगना - - - - - - - - - - - - - -

4. सोचो और बताओ -

क. कोटा में हवाई - अड्डा कहाँ बना हुआ है ?
ख. कोटा बैराज से कितनी नहरें निकलती है ?
ग. अणु बिजली घर कहाँ बनाया गया है ?
घ. रावत भाटा को नए जमाने का नया तीर्थ क्यों कहा गया है ?

5. दिए गए गद्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर लिखो -

सचमुच बहुत कुछ बदलाव आ गया है - कोटा में । इतने सारे कल - कारखाने एक शहर में होने से कोटा भारत का दूसरा कानपुर हो गया है । चम्बल पर बांध बांधना आसान काम नहीं था । किन्तु वैज्ञानिकों के अनोखे करिश्मों और अभियन्ताओं की लगन व परिश्रम से बांध बंध गया । कोटा बैराज से नहरें निकाली गईं । बांध के पास ही ताप बिजली घर बनाया गया है ।

क -कोटा को दूसरा कानपुर क्यों कहा गया हैं ?
ख -बांध बांधना आसान काम क्यों नहीं है ?
ग - नहरें क्यों उपयोगी हैं ?
घ - ताप बिजली घर चलता है ?

★★★★

पाठ - 27

आओ चुनाव देखें

मदन और रतन दोनों भाई हैं । मदन छोटा भाई और रतन बड़ा भाई है । एक दिन मोहल्ले में चहल - पहल और नारेबाजी होती देख मदन ने अपने भाई से पूछा -

मदन - भैया । इतना धूम - धड़ाका और नारेबाजी क्यों हो रही है।

रतन- चुनाव के कारण। ग्राम पंचायत के लिए पंच और सरपंच चुनेंगें। हर पाँचवे वर्ष पंचायतों के चुनाव होते हैं । हर व्यक्ति जिसकी उम्र अठारह वर्ष या उससे अधिक होती है , वह मत दे सकता है । मत देने वालों का नाम मतदान सूची में लिखा होता है ।

मदन - मतदान सूची क्या होती हैं ? नाम सूची में न होने पर क्या करते हैं ।

रतन - सरकार अठारह वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों के नाम की एक सूची तैयार करवाती है । पिता या पति का नाम भी साथ लिखा जाता है । जिनका नाम सूची में नहीं होता है - उन्हें अपने नाम जुडवाने की कार्यवाही करनी चाहिए ।

मदन - जिनका नाम मतदान सूची में होता है , क्या वही चुनाव लड़ सकता है ।

रतन - हां , जो उस गाँव या पंचायत क्षेत्र का रहने वाला हो वही चुनाव लड़ सकता है ।

मदन- चुनाव कौन करवाता है ?

रतन- जिले का जिलाधीश सारी व्यवस्था करता है । वही मतदान केन्द्र पर मतदान का दिनांक तय करता है । मतदान दल वहाँ दो दिन पहले पहुँच जाता है।

मदन- मतदान - दल क्या होता है ?

रतन- यह जिलाधीश द्वारा नियुक्त सरकारी कर्मचारियों का दल होता है यह चुनाव करवाने के लिए मत पेटियाँ, मतदान सूचियां, मत - पत्र, अमिट - स्याही, स्टाम्प पेड, सीलें आदि मतदान केन्द्र पर ले जाता है ।

मदन- अमर काका कह रहे थे कि वोट मुझे देना । चुनाव - चिह बाद में बताऊँगा।

रतन - हाँ चुनाव में खड़े होने का प्रपत्र भरने पर ही चुनाव चिह मिलता है ।

मदन- वोट कैसे डालेंगे ?

रतन- मतदान केन्द्र में दो - तीन बूथ होंगे । लोग कतार बना कर एक - एक कर अन्दर जाएँगे। मतदान अधिकारी मतदाता - सूची में उसका नाम देखेगा व नाम बोलेगा, एजेंट भी नाम सुनेगा । गलत व्यक्ति होने पर आपत्ति करेगा । दूसरा अधिकारी मत -पत्र देगा और बायें हाथ की पहली अंगुली के नाखून की जोड़ पर स्याही लगाएगा । तीसरा अधिकारी उसे समझाएगा कि बूथ में जाकर कैसे मत पत्र पर निशान लगाना है , फिर उसे मोड़ना है , और लाकर मत - पेटी में डालना है ।

मदन- वोट डाल चुकने पर निर्णय कब सुनाया जाता है ?

रतन - चुनाव समाप्ति के बाद ही निर्वाचन अधिकारी के निर्देश से उन मत - पत्रों की गणना कराई जाती है । तब निर्णय सुनाया जाता है । परिणाम घोषित होने के बाद चुने हुए लोगों को शपथ दिलाई जाती है ।

मदन- शपथ किस बात की ली जाती है ?

रतन- यही कि चुना गया व्यक्ति अपने पद पर रहते हुए अपने कर्तव्य का पालन ईमानदारी से करे।

1. **कठिन शब्द**

हिन्दी	वागड़ी
चुनाव	सुनाव

हिन्दी	वागड़ी
मोहल्ला	फळो
जल्सा	जळसो
मत	वोट
पंचायत	पंसात
पंच	पंस
सरपंच	सरपस
प्रकाशन	सपाड़वु
अंकित	लकवु ।
कार्यवाही	करावाए ।
दर्ज	लकवु
जिला	जिलो
जिलाधीश	कलेक्टर
व्यवस्था	बन्दोबस
मतदान	वोट आलवु
मत पत्र	वोट नु कागद
अमिट स्याही	ने मटवावाळी साए
चुनाव चिह्न	सुनाव नु निसाण
प्रपत्र	उमिदवारनु कागद
कतार	लेण
पेचीदा	मुसकेल
निर्णय	फेसलो
निर्वाचन अधिकारी	वोटिग पालटी नो मुटो अपसर
गणना	गणवु

हिन्दी	वागड़ी
परिणाम	फळ
शपथ	कसम
मत गणना	वोट गणवु

2. यह बताओं कि इनमें से किन वाक्यों में (,) के स्थान पर (कि) रखा जा सकता है ?

1 - चुनाव कैसे होते हैं , यह भी तुम्हें जानना चाहिए ।

2 - मुझे तो मालूम नहीं, चुनाव कैसे होते हैं ।

3 - यह तो बताओ, चुनाव कौन करवाता है ?

4 - जिसका नाम मतदान सूची में होता है , क्या वही चुनाव लड़ सकता है ?

5 - हाँ, सही बात है ।

6 - चुनाव हो जाने के बाद, निर्वाचन अधिकारी मत - पत्रों की गणना करवाता है ।

3. समझो और बताओ -

1 - मतदान सूची में अगर नाम अंकित न हो तो क्या करना होता है ?

2 - मतदान - दल क्या क्या सामान लेकर मतदान केन्द्र पर पहुँचता है ?

3 - मतदान केन्द्र पर मतदाता को किन - किन अधिकारियों के पास हो कर जाना पड़ता है ?

4 - विजयी उम्मीदवार को किस बात की शपथ दिलाते हैं ?

4. दिए गए गद्यांश को पढ़ कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखों -

हर पांचवे वर्ष पंचायतों के चुनाव होते हैं लेकिन यह आवश्यक नहीं है । किसी भी कारण चुनाव आगे बढ़ भी जाते हैं । हर व्यक्ति जिसकी उम्र अठारह वर्ष या इससे अधिक होती है , वह मत दे सकता है । चुनाव चिह्न प्रपत्र भरने के बाद ही मिलता है । मतदान - सूची में नाम अंकित होने पर ही वोट दे सकता है। नाम नहीं होने पर जुडवाना आवश्यक है । चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद चुने हुए व्यक्ति को इस बात की शपथ लेनी आवश्क होती है कि वह अपने पद पर रहते हुए अपने कर्तव्य का पालन ईमानदारी से करेगा ।

1 - चुनाव कितने वर्ष में होते हैं ?

2 - वोट देने का अधिकार कितनी उम्र होने पर मिलता हे ?

3 - चुनाव चिह्न कब मिलता है ?

4 - चुनाव के पश्चात बिजयी उम्मीदवार को शपथ लेना क्यों आवश्यक है ?

★★★★

पाठ - 28

आजादी के दीवाने

बिगुल बज गया आजादी का ,
हर मजदूर किसान जगा ।
धरती जागी, अम्बर जागा ,
सारा हिन्दुतान जगा ।

धरती अपनी , शासन अपना ,
एक यही बस नारा था ।
पराधीनता के हर दुःख से ,
पाना तब छुटकारा था ।

बापू ने जो अलख जगाई ,
गूँज उठी वह घर - घर में ।
भारतमाता की जय गूँजी ,
वीर जवाहर के स्वर में ।

राजस्थान नहीं था पीछे,
कुरबानी की घड़ियों में ।
देश - प्रेम कसमसा रहा था,
उन फालौदी कड़ियों में ।

वीर विजय सिंह , अर्जुन सेठी,
बन्धु बारहठ से सेनानी ।
गुरू गोविन्द , तेजावत , वर्मा,
बिस्सा , गोपा और उस्मानी ।

आजादी के दीवानों के
नाम कहाँ तक तुम्हे गिनाएँ ?
शीश दे दिए जिन लोगों ने
आज उन्हें हम शीश नवाएँ ।

★★★★

पाठ - 28

आजादी के दीवाने

भारत की आजादी का बिगुल बजने के साथ - साथ भारत का हर मजदूर हर किसान देश को आजाद करवाने के लिए जागा । धरती से लेकर आकाश तक सभी देश को आजाद करवाने में जागृति आई । आजादी के बाद ..ती भी अपनी होगी तथा इस पर शासन भी अपना ही होगा यही उस समय एक मात्र नारा था । सभी के मन में पराधीनता की पीड़ा से छुटकारा पाने की बात थी । महात्मा गाँधी ने जो जागृति का मंत्र दिया उसकी गूँज प्रत्येक घर से उठ रही थी । जवाहर लाल नेहरू के स्वर में भारत माता की जय गूँज रही थी । ऐसे बलिदान के समय में राजस्थान भी पीछे नहीं था । यहाँ भी लोगों में देश प्रेम उमड़ रहा था । जेल की सलाखों और लोहे की जंजीरों में बंधा देश प्रेम - आजादी के लिए कसमसा रहा था । यहाँ भी ऐसे वीर स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं जिन्होंने देश की आजादी केलिए अपनी कुर्बानी दी । इन सेनानियों में विजयसिंह, पथिक, अर्जुन लाल सेठी , केसरी सिंह बारहठ , मोती लाल तेजावत , माणिक्य लाल वर्मा , बालमुकुन्द बिस्सा, सागरमल गोपा तथा उस्मान के नाम विशेष उल्लेखनीय है । ऐसे स्वतंत्रता सेनानी , आजादी के दीवाने लोगों ने अपने शीश कटाए । आइये उन लोगों को हम शीश नवाएँ ।

1. कठिन शब्द

हिन्दी	वागड़ी
आजादी	आजादी
दीवाने	हपुत

हिन्दी	वागड़ी
मजदूर	मजुर
अम्बर	अंगास
शासन	राज
पराधीनता	गुलामी
छुटकारा	छुट्टी
अलख	अल
वीर	बादुर
स्वर	बोली
कुर्बानी	असलकाम हारू मरवु
शीश	मुकुट / माथु
नवाना	नमावणु / नमणु

2. निम्न लिखित शब्दों में " ई " की मात्रा लगा कर संज्ञा शब्द बनाओ -

आजाद - - - - - - - - आजादी

कुरबान - - - - - - - -

फौलाद - - - - - - - -

नादान - - - - - - - -

ईमानदार - - - - - - - -

3. अपने शब्दों में सरल अर्थ करो -

क - पराधीनता के हर दुख से पाना जब छुटकारा था ।

ख - बापू ने जो अलख जगाई गूंज उठा वह घर - घर में

ग - देश - प्रेम कसमसा रहा था उन फौलादी हथकड़ियों में

घ - शीश दिए जिन लोगों ने आज उन्हें हम शीश नवाएँ

4. सोचो और बताओ -

क - आजादी का बिगुल बजने पर किसानों और मजदूरों ने क्या किया ?

ख - बापू ने कौनसी अलख जगाई थी ?

ग - राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी कौन - कौन थे ?

घ - स्वतंत्रता सेनानीयों के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ?

ङ - स्वतंत्रता संग्राम में बापू व पंडित जवाहरलाल नेहरू की क्या भूमिका थी ?

5. दिए गए गद्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दिजिए

भारत को आजाद कराने के लिए जब महात्मा गांधी व पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे बड़े - बड़े नेता आगे बढ़े तो उस समय भारत के मजदूर व किसान भी पीछेनहीं रहे। सारेहिन्दु तान में जागृति की लहरछा गइ। ऐसे बलिदान केसमय राजस्थान ने भी पूर्ण सहयोग दिया । यहाँ ऐसे वीर व स्वतंत्रता सेनानी हुए जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानी दी है । इन सेनानियों में विजय सिंह पथिक, अर्जुन लाल सेठी , केसरसिंह बारहठ , मोतीलाल तेजावत , माणिक्य लाल वर्मा आदि प्रमुख है। जेल की सलाखों और लोहे की जंजीरों में बंधा देश प्रेम - आजादी के लिए जब कसमसा रहा था उस समय स्वतंत्रता सेनानियों और आजादी के दीवानों

ने अपने शीश कटवा कर भारत को आजाद कराया । हम उन्हें शीश नवाते हैं ।

1 - बापू व जवाहर लाल नेहरू की क्या भूमिका थी ?

2 - राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखो?

3 - बलिदानी वीरों के प्रति हमारा कर्तव्य क्या है ?

★★★★